अध्याय 02

भूमंडलीकृत विश्व का बनना*

इस अध्याय में...

- आधुनिक युग से पहले
- 19वीं शताब्दी (1815-1914)
- महायुद्धों के बीच अर्थव्यवस्था
- विश्व अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण : युद्धोत्तर काल

वैश्वीकरण (Globalisation) एक आर्थिक पद्धति है, जो लगभग 50 वर्ष पुरानी है, लेकिन भूमंडलीकृत विश्व (Global World) को बनने में बहुत अधिक वर्ष लगे हैं। वैश्वीकरण को समझने के लिए हमें व्यापार (Trade), प्रवास (Migration), लोगों की काम के लिए खोज, पूँजी (Capital) की आवाजाही आदि के इतिहास को समझने की आवश्यकता है।

आधुनिक युग से पहले

मानव समाज परस्पर मजबूती से जुड़ा हुआ है। प्राचीन समय से ही यात्री, व्यापारी, पुजारी व तीर्थयात्री विभिन्न कारणों के लिए लंबी-लंबी दूरियों की यात्रा करते थे। इनमें से प्रमुख कारण ज्ञान प्राप्ति, अधिक अवसरों की तलाश, धार्मिक अथवा आध्यात्मिक पूर्ति तथा दुर्व्यवहार अर्थात् यातनापूर्ण जीवन से बचाव आदि थे। वे अपने साथ बहुत-सी वस्तुएँ, धन, विचार, कौशल, मूल्य, खोजें और यहाँ तक कि रोगाणु व बीमारियाँ भी साथ लेकर जाते थे। 13वीं शताब्दी से देशों के मध्य मजबूत संबंध स्थापित होने लगे थे।

प्राचीन समय में 3000 ईसा पूर्व में समुद्री तटों से होने वाले व्यापार के माध्यम से सिंधुवासी, पश्चिमी एशिया के लोगों के साथ जुड़े हुए थे। इसी प्रकार एक हजार साल से ज्यादा समय से मालदीव के समुद्रों में पाई जाने वाली **कौड़ियों** (जिन्हें मुद्रा के रूप में प्रयोग किया जाता था) की प्राप्ति अफ्रीका और चीन से हुई है।

रेशम मार्ग से विश्व का जुड़ना

- रेशम मार्ग (Silk Route) ईसा पूर्व के समय में ही सामने आ चुके थे और लगभग 15वीं शताब्दी तक अस्तित्व में थे। रेशम मार्ग विश्व के दूर-दूर स्थित भागों के बीच आधुनिक युग से पूर्व के व्यापारिक और सांस्कृतिक संपर्कों का एक अच्छा उदाहरण है; जैसे—यूरोप व उत्तरी अफ्रीका के साथ एशिया का संपर्क। रेशम मार्गों के माध्यम से चीन से रेशम के जहाज, भारतीय मसाले व वस्त्र, यूरोप से सोना व चाँदी विश्व के विभिन्न स्थानों तक ले जाए गए। वापसी में सोने-चाँदी जैसी कीमती धातुएँ यूरोप से एशिया पहुँचती थीं।
- इन मार्गों से बौद्ध उपदेशक, ईसाई मिशनरियाँ और बाद में मुस्लिम उपदेशकों ने भी यात्राएँ कीं। ये मार्ग विश्व के दूरतम देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को और व्यापार के महान् संसाधनों के रूप में स्वयं को सिद्ध कर चुके हैं।

भोजन की यात्रा : स्पैघेत्ती और आलू

- बाह्य पदार्थों के माध्यम से भी सांस्कृतिक आदान-प्रदान के बारे में पता चलता है। खाद्य पदार्थ; जैसे—आलू, सोयाबीन, मूँगफली, मक्का, टमाटर, मिर्ची, शकरकंद आदि यूरोप और एशिया में तब पहुँचे, जब अमेरिका की खोज क्रिस्टोफर कोलंबस ने की थी।
- नूडल्स (Noodles) चीन से पश्चिम में पहुँचा और वहाँ उससे **स्पैघेत्ती** (Spaghetti) का जन्म हुआ। पास्ता (Pasta) अरब यात्रियों के साथ पाँचवीं सदी में सिसली पहुँचा, जो इटली का एक प्रांत है। आलू से परिचय होने के बाद यूरोप के निर्धन अच्छा भोजन करने लगे, जिससे उनका जीवन बढ़ गया।
- आयरलैंड के गरीब काश्तकार (Peasants) आलू पर काफी निर्भर हो चुके थे। 1840 के दशक के मध्य आयरलैंड में आलू की फसल किसी बीमारी के कारण खराब हो गई, जिससे आयरलैंड में भयानक **आलू अकाल** (Potato Famine) की स्थिति बन गई और लगभग दस लाख लोगों से भी अधिक की मृत्यु हो गई।

* इस अध्याय से संबंधित प्रश्न केवल पीरियोडिक टेस्ट में पूछे जाएँगे। बोर्ड परीक्षा में इस अध्याय से प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे।

विजय, बीमारी और व्यापार

- 16वीं शताब्दी में यूरोपीय नाविकों ने एशिया और अमेरिका तक समुद्री मार्ग खोज लिया।
- भारतीय उपमहाद्वीप व्यापार का केंद्र था, लेकिन यूरोपियों के प्रवेश ने इस व्यापार के यूरोप तक फैलाने में मदद की।
- पेरू और मैक्सिको की खानों में पाई जाने वाली कीमती धातु चाँदी ने यूरोप की संपदा में वृद्धि की और उसका व्यापार एशिया तक बढ़ गया। 17वीं शताब्दी के आते-आते संपूर्ण यूरोप में दक्षिणी अमेरिका की धन संपदा के विषय में तरह-तरह के किस्से बनने लगे थे। इन्हीं किस्सों के कारण वहाँ के लोग **एल डोराडो** (El Dorado) को सोने का शहर मानने लगे थे।
- 16वीं शताब्दी के मध्य में स्पेनवासी और पुर्तगाली अमेरिका को जीतने वाले पहले यूरोपीय थे।
- अमेरिका की विजय संभव थी, क्योंकि भयानक रोग **छोटी चेचक** (Smallpox) ने अमेरिका की वास्तविक आबादी के संपूर्ण समुदाय को नष्ट कर दिया था। उनकी इस रोग के प्रति प्रतिरोधक क्षमता न के बराबर थी। परिणामस्वरूप हजारों यूरोपीय अमेरिका चले आए और अफ्रीका में पकड़े गए गुलामों को यूरोपीय बाजार के लिए कपास और चीनी उत्पाद के कार्य में लगा दिया गया।
- यूरोप विश्व व्यापार के केंद्र के रूप में उभरा।
- 19वीं सदी तक यूरोप में गरीबी और भूख पूर्णरूप से व्याप्त थी। यहाँ के शहरों में अत्यंत भीड़ थी और बीमारियों की प्रमुखता थी। धार्मिक टकराव सदैव विद्यमान थे। इन सभी कारणों से हजारों लोग यूरोप से अमेरिका गए।
- 18वीं सदी के अंतिम दशकों तक चीन और भारत को दुनिया के सबसे अमीर देशों में गिना जाता था। एशिया के व्यापारों में इन दोनों की प्रभुता थी, लेकिन विशेषज्ञों के अनुसार 15वीं सदी से चीन ने अपना व्यापार दूसरे देशों के साथ कम करना शुरू कर दिया। इस प्रकार, चीन की घटती भूमिका और अमेरिका के बढ़ते महत्त्व के साथ व्यापार की दिशा पश्चिम की ओर उन्मुख होने लगी। इस तरह यूरोप ही विश्व व्यापार का केंद्र बन गया।

19**वीं शताब्दी** (1815-1914)

- 19वीं शताब्दी में आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी कारकों ने विभिन्न तरीकों से परस्पर प्रभाव डाला। इसने समाज को बदल दिया और अपने बाहरी संबंधों को एक नया रूप दिया।
- अर्थशास्त्रियों ने अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक विनिमयों के अंतर्गत तीन प्रकार की गतियों या प्रवाहों की पहचान की है
  (i) वस्तुओं में व्यापार का प्रवाह (विशेष रूप से कपड़े व गेहूँ)।
  (ii) रोजगार की तलाश में लोगों के प्रवास के कारण श्रम का प्रवाह।
  (iii) लंबी दूरी वाले स्थानों, अल्प अवधि या दीर्घ अवधि के निवेश के लिए पूँजी का प्रवाह।
- ये तीनों प्रवाह एक-दूसरे से जुड़े हुए थे और महत्त्वपूर्ण रूप से लोगों के जीवन को प्रभावित करते थे।

विश्व अर्थव्यवस्था का उदय

18वीं शताब्दी के अंत में औद्योगीकरण और जनसंख्या वृद्धि ने ब्रिटेन में खाद्यान्न की माँग में वृद्धि कर दी। इस स्थिति ने खाद्यान्न मूल्य में वृद्धि कर दी।

कॉर्न लॉ और इसके प्रभाव

- जमींदारों (Landowners) के दबाव के कारण सरकार ने कॉर्न (मक्का) के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया। इस कानून को सामान्यत: **कॉर्न लॉ** (Corn Law) के नाम से जाना जाता था।
- कॉर्न लॉ के सूत्रपात के बाद भोज्य पदार्थों का मूल्य अत्यधिक (Exorbitant) हो गया।
- नगरों में रहने वाले उद्योगपति और लोग उच्च मूल्यों के कारण अप्रसन्न थे। उन्होंने कॉर्न लॉ का उन्मूलन (Abolition) करने के लिए ब्रिटिश सरकार पर दबाव डाला।
- कॉर्न लॉ के उन्मूलन के बाद ब्रिटेन में भोजन पहले की अपेक्षा अत्यधिक सस्ती दरों पर आयातित हो सका।
  कॉर्न लॉ के उन्मूलन के प्रभाव निम्नलिखित थे
  - आयातित खाद्य पदार्थों की लागत ब्रिटेन में उत्पन्न होने वाले खाद्य पदार्थों से भी कम थी।
  - भोजन के मूल्य में गिरावट आने से ब्रिटेन में खपत में वृद्धि हो गई।
  - 19वीं शताब्दी के मध्य से ब्रिटेन में तेजी से औद्योगिक वृद्धि हुई और आय भी बढ़ गई तथा भोजन के लिए अधिक माँग में भी बढ़ोतरी हुई।
  - पूर्वी यूरोप, रूस, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया, दुनिया के हर हिस्से में जमीनों को साफ करके खेती की जाने लगी, जिससे ब्रिटेन की माँग को पूरा किया जा सके।
  - कृषि संबंधी उत्पादों का निर्यात करने के लिए नए रेलवे स्टेशनों व बंदरगाहों की आवश्यकता पड़ी।
  - कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि होने से अत्यधिक आवासों व प्रबंधनों की आवश्यकता हुई।
  - श्रम की माँग के कारण 19वीं शताब्दी में लाखों लोग बेहतर जीवन की तलाश में यूरोप से अमेरिका और ऑट्रेलिया की ओर प्रवास करने लगे। लंदन जैसे वित्तीय केंद्रों से पूँजी का प्रवाह होने लगा।
  - 1890 ई. से **वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था** (Global Agricultural Economy) का विकास हुआ।
  - कभी-कभी रेलों या जहाजों द्वारा हजारों मील दूर से भोजन आता था।
- कॉर्न लॉ के उन्मूलन का प्रभाव भारत (विशेषकर पश्चिमी पंजाब) में भी छोटे पैमाने पर देखा जा सकता है
  - भारत में ब्रिटिश शासकों ने निर्यात हेतु गेहूँ और कपास में बढ़ोतरी करने के लिए उपजाऊ कृषि भूमि में सिंचाई का विकास कर पंजाब को रूपांतरित कर दिया। कपास का उत्पादन भी पूरी दुनिया में तेजी से होने लगा ताकि ब्रिटिश मिलों की कपड़े की माँग को पूरा किया जा सके।
  - क्षेत्रीय वस्तुओं (Regional commodities) का विकास इतनी तेजी से हुआ कि 1820 से 1914 ई. के बीच विश्व व्यापार 25 से 40 गुना बढ़ गया। इस व्यापार में लगभग 60% भाग कृषि उत्पादों; जैसे—गेहूँ, कपास तथा खनिज पदार्थ; जैसे—कोयले का था।

19वीं शताब्दी के विश्व में तकनीक की भूमिका

- तकनीक (प्रौद्योगिकी) या नए आविष्कार; जैसे—**रेलवे, स्टीमर** और **टेलीग्राफ** ने 19वीं शताब्दी के विश्व के रूपांतरण (Transformation) पर अत्यधिक प्रभाव डाला।
- तीव्र रेल परिवहन, मालगाड़ी के हल्के डिब्बों और विशाल जहाजों ने कम लागत पर, परंतु तीव्र गति से अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया या न्यूजीलैंड में दूर स्थित खेतों से तैयार माल को यूरोप के बाजारों तक पहुँचाने में काफी सहायता की।

मांस परिवहन में तकनीक की भूमिका

- 1870 के दशक तक अमेरिका से यूरोप को माँस निर्यात नहीं किया जाता था। उस समय केवल जिंदा जानवर ही भेजे जाते थे। जिंदा जानवर को भेजने में बहुत कठिनाई थी जिनमें बहुत सारे जानवर मर जाते थे या लंबे सफर के कारण बीमार हो जाते थे और ये खाने योग्य नहीं रहते थे।
- **रेफ्रिजरेटिड जहाजों** (Refrigerated Ships) के विकास ने खराब होने वाले खाद्य पदार्थों को लंबी दूरी तक पहुँचाने में काफी सहायता की।
- जमा हुआ मांस (Frozen meat) अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड से विभिन्न यूरोपीय देशों तक निर्यात किया गया।
- इससे यूरोपीय बाजार में मांस का मूल्य कम हो गया और मांस (कभी-कभी मक्खन और अंडा) निर्धनों के लिए प्रतिदिन का आहार बन गया। इस बेहतर आजीविका की स्थिति ने देश के अंदर सामाजिक शांति उत्पन्न कर दी और उपनिवेशों में साम्राज्यवाद (Imperialism) को समर्थन मिला।

19वीं शताब्दी के अंत में उपनिवेशवाद

- 19वीं शताब्दी के अंत में व्यापार और बाजार विस्तृत हो गया। व्यापार में बढ़ोतरी और विश्व अर्थव्यवस्था के साथ निकटता का एक परिणाम यह हुआ कि दुनिया के बहुत सारे भागों में स्वतंत्रता और आजीविका के साधन छिनने लगे। 19वीं शताब्दी के अंत में यूरोपीयों की विजयों से बहुत सारे कष्टदायक आर्थिक, सामाजिक और पारिस्थितिकीय परिवर्तन आए और औपनिवेशिक समाजों को विश्व अर्थव्यवस्था में समाहित कर लिया गया।
- ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, बेल्जियम और बाद में संयुक्त राज्य अमेरिका शक्तिशाली औपनिवेशिक शक्तियाँ बन गए।

रिंडरपेस्ट या मवेशी प्लेग

- 1890 के दशक में पूर्वी अफ्रीका में तेजी से फैलने वाली पशु महामारी रिंडरपेस्ट ने एक बड़ी संख्या में पशुओं को समाप्त कर दिया। 1892 ई. में यह अफ्रीका के अटलांटिक तट तक पहुँच गई। समय अंतराल के पश्चात् यह अफ्रीका के दक्षिणी भाग तक भी फैल गई। संपूर्ण अफ्रीका में फैली इस बीमारी ने 90% पशुओं की जान ली।
- इसके पश्चात् औपनिवेशिक साम्राज्य ने सत्ता को और मजबूत करने तथा अफ्रीकियों को श्रम बाजार में धकेलने के लिए वहाँ के बागान मालिकों, खान मालिकों तथा शेष बचे पशुओं को भी अपने कब्जे में ले लिया।
- रिंडरपेस्ट बीमारी ने अफ्रीकी आजीविका और स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया। अफ्रीका महाद्वीप प्रारंभिक रूप से ही भू-संसाधन से परिपूर्ण रहा है।
- उन्नीसवीं सदी के अंत में यूरोपीय शक्तियों ने अफ्रीका में प्रवेश किया तथा यहाँ उपस्थित खदानों का दोहन प्रारंभ किया। प्रारंभ में यूरोपीय शक्तियों को खदानों तथा कृषि कार्यों में मजदूरों की कमी की समस्या का सामना करना पड़ता था, क्योंकि अफ्रीका में इस समय पैसे के एवज में कार्य करने की प्रथा बहुत कमी थी।

भारत से अनुबंधित मजदूरों (गिरमिटिया) का प्रवास

- अनुबंधित मजदूर (Indentured Labour) से तात्पर्य किसी नियोक्ता के लिए एक निश्चित समय के लिए विशिष्ट राशि पर अनुबंध के अंतर्गत कार्य करने वाले बँधुआ मजदूर (Bonded Labour) से है, जिन्हें घर या नए देशों में ही भुगतान किया जाता था।
- 19वीं शताब्दी में लाखों भारतीय व चीनी मजदूर बागानों, खदानों और विश्व की विभिन्न निर्माणकारी परियोजनाओं में कार्य करने के लिए गए।
- अधिकांश भारतीय अनुबंधित कर्मचारी वर्तमान पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य भारत और तमिलनाडु से आए।
- 19वीं शताब्दी के मध्य में भारत के इन राज्यों में कई सामाजिक परिवर्तन हुए; जैसे—कुटीर उद्योगों का पतन हो गया, जमीन का किराया बढ़ गया और खदानों तथा बागानों के लिए जमीन को साफ कर दिया गया।
- इन सब कारणों ने गरीबों को कार्य की तलाश में प्रवास करने के लिए बाध्य कर दिया।

भारतीय अनुबंधित प्रवासियों का गंतव्य अर्थात् स्थान

- भारतीय अनुबंधित प्रवासियों के मुख्य गंतव्य कैरीबियाई द्वीप मुख्यत: त्रिनिदाद, गुयाना तथा सूरीनाम, मॉरिशस और फिजी थे। इसके अतिरिक्त उनके स्थानीय आवास के आस-पास के अन्य स्थान थे।
- तमिल प्रवासी सीलोन और मलाया गए। कुछ अनुबंधित कर्मचारी आसाम के चाय बागानों में नियुक्त किए गए थे।

अनुबंधित मजदूरों की स्थिति

- इन मजदूरों की नियुक्ति नियोक्ता से जुड़े और छोटे-छोटे कमीशन पाने वाले एजेंटों के द्वारा की गई थी।
- एजेंट अनुबंधित मजदूरों से उनकी बेहतर आजीविका दशाओं, अत्यधिक धन और अन्य सुविधाओं का वादा करके उनकी नियुक्ति करते थे, तथापि जब वे बागानों में पहुँचते थे, तो वहाँ वे विभिन्न परिस्थितियाँ पाते थे, जिनकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

19वीं शताब्दी में सांस्कृतिक दृश्य में परिवर्तन

- 19वीं शताब्दी में अनुबंध को **नई दास प्रथा** (New System of Slavery) के रूप में वर्णित किया गया। यद्यपि जीवन जीने और कार्य करने की दशाएँ कठोर थीं, फिर भी कर्मचारियों ने जीने के अपने स्वयं के तरीके तलाश लिए। उन्होंने अपने विभिन्न सांस्कृतिक रूपों का मिश्रण करके मनोरंजन के अन्य रूपों तथा त्योहारों के नए रूपों का विकास किया।
- त्रिनिदाद में **रियटस कार्निवाल** (Riotous Carnival) (**होसे**[1]), **रास्ताफारियानवाद** (जमैका की एक आध्यात्मिक विचारधारा) का विरोधी धर्म, जिसे जमैका के गायक बॉब मार्ले ने प्रसिद्ध बना दिया, त्रिनिदाद और गुयाना के चटनी संगीत (भारतीय अप्रवासियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति) आदि सभी सांस्कृतिक सम्मिश्रण के ही उदाहरण हैं।

---

1 होसे (Hosie) त्रिनिदाद में मुहर्रम के सालाना जुलूस को एक विशाल उत्सवी मेले का रूप दिया गया, जिसे होसे नाम दिया गया।

अनुबंधित मजदूरों के वंशज

- कई अनुबंधित मजदूर स्थायी रूप से उन देशों में बस गए, जहाँ वे अपने अनुबंधों को समाप्त करने के बाद चले गए थे। इस कारण इन देशों में भारतीय वंशजों के लोगों के विशाल समुदाय हैं।
- उदाहरण के लिए; नोबेल पुरस्कार विजेता; जैसे—वी एस नायपॉल, कुछ प्रसिद्ध वेस्टइंडीज क्रिकेटर; जैसे—शिवनारायण चंद्रपॉल और रामनरेश सरवन आदि भारत से आए अनुबंधित मजदूरों के ही वंशज हैं। वर्ष 1921 में अनुबंधित श्रम की इस प्रथा का, भारतीय राष्ट्रवादियों द्वारा कई वर्षों तक किए गए इसके विरोध के बाद उन्मूलन हो गया।

विदेश में भारतीय उद्यमी

- भारतीय साहूकार (महाजन), साहूकारों तथा व्यापारियों के उन लोगों के समूहों के बीच थे, जो मध्य और दक्षिण-पूर्वी एशिया निर्यातोन्मुखी खेती के लिए ऋण देते थे। **शिकारीपुरी श्रॉफ** और **नाट्टुकोट्टई चेट्टियार** कुछ प्रसिद्ध भारतीय साहूकार थे।
- भारतीय व्यापारियों और महाजनों ने भी अफ्रीका में यूरोपीय उपनिवेशवादियों का अनुसरण किया। हैदराबादी सिंधी व्यापारियों ने दुनियाभर के बंदरगाहों पर अपने बड़े-बड़े एम्पोरियम खोल दिए। ये प्राय: पर्यटकों को स्थानीय और आयातित कलाकृतियाँ (दुर्लभ वस्तुएँ) बेचा करते थे।

भारतीय व्यापार, उपनिवेशवाद और वैश्विक व्यवस्था

भारत से उत्कृष्ट कपास पूरे यूरोप में निर्यात की जाती थी। औद्योगीकरण के पश्चात् ब्रिटेन में भी कपास का उत्पादन बढ़ने लगा था। उद्योगपतियों ने सरकार पर भारत से आयातित कपास को प्रतिबंधित करने का दबाव डाला और स्थानीय उद्योगों की सुरक्षा करे। फलस्वरूप ब्रिटेन में भारतीय कपास (Cotton) का आयात कम होने लगा।

भारतीय व्यापार और उपनिवेशवाद

- ब्रिटिश सरकार ने सूती वस्त्र के आयात पर सीमा शुल्क (Tarrifs) की उच्च दरें लगा दीं।
- 19वीं शताब्दी के प्रारंभ से ब्रिटिश निर्माणकर्ता भी अपने वस्त्रों के लिए विदेशी बाजार की तलाश करने लगे, परिणामस्वरूप भारतीय वस्त्र उद्योग प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुआ।
- भारतीय वस्त्र को दूसरे अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में भी प्रतिस्पर्द्धा का सामना करना पड़ा।
- 1800 ई. के आसपास निर्यात में सूती कपड़े का प्रतिशत 30 था, जो 1870 तक केवल 3% रह गया था।
- जब तक विनिर्माण के निर्यात का द्रुतगति से पतन हुआ, तब तक समान रूप से कच्चे माल के निर्यात में तेजी से वृद्धि हो गई।
- 1812 से 1871 ई. के बीच कच्चे कपास का निर्यात 5% से बढ़कर 35% तक पहुँच गया था।
- अंग्रेजों (ब्रिटिश) ने भारतीय किसानों पर नील (इंडिगो) तथा अफीम की खेती करने का दबाव बनाया।
- नील, जो कपड़े को रँगने के लिए प्रयोग किया जाता था, का ब्रिटेन को निर्यात किया जाता था।
- भारत में उगाई जाने वाली अफीम (1820 से) चीन को निर्यात की जाती थी। अफीम की बिक्री से प्राप्त धन ब्रिटेन द्वारा अपनी चाय पर पूँजी लगाने तथा चीन से अन्य आयातित वस्तुओं के लिए प्रयोग किया जाता था।

भारत और ब्रिटेन के बीच व्यापारिक संबंध

- संपूर्ण 19वीं शताब्दी में, भारतीय बाजार में ब्रिटिश निर्माणकर्ताओं की अधिकता हो गई। खाद्यान्न और कच्चा माल, जो भारत से निर्यात किया जाता था, उसमें ब्रिटेन में वृद्धि हो गई।
- भारत द्वारा ब्रिटेन को भेजे जाने वाले माल की अपेक्षा ब्रिटेन से भारत भेजे जाने वाले माल की दरें ऊँची होती थीं। इस प्रकार ब्रिटेन भारत के साथ **व्यापार अधिशेष**[2] (Trade Surplus) में रहता था और इस अधिशेष का प्रयोग दूसरे देशों के साथ व्यापार में होने वाले घाटे की पूर्ति करने में करता था।
- ब्रिटेन के इस व्यापार अधिशेष ने घरेलू खर्चों में सहायता की; जैसे—ब्रिटिश अधिकारियों व व्यापारियों को भेजे जाने वाले व्यक्तिगत धन के लिए तथा बाहरी ऋण के ब्याज का भुगतान करने और भारत में ब्रिटिश अधिकारियों की पेंशन के लिए।

महायुद्धों के बीच अर्थव्यवस्था

- प्रथम विश्वयुद्ध (1914-18) मुख्यत: यूरोप में लड़ा गया था, लेकिन इसका प्रभाव संपूर्ण विश्व पर पड़ा।
- प्रथम विश्वयुद्ध दो शक्ति गुटों के बीच लड़ा गया था। एक तरफ **मित्र राष्ट्र** (Allies) ब्रिटेन, फ्रांस व रूस थे (बाद में संयुक्त राज्य अमेरिका भी जुड़ गया) और दूसरी तरफ **मध्य शक्तियाँ** (Central Powers) जर्मनी, ऑस्ट्रिया, हंगरी और ऑटोमन तुर्की थे।
- संसार के अग्रगामी औद्योगिक राष्ट्र युद्ध से जुड़ गए और अपने शत्रुओं का विनाश करने का प्रत्येक संभव प्रयास किया गया। प्रथम विश्व युद्ध प्रथम आधुनिक औद्योगिक युद्ध था। इस युद्ध में पहली बार आधुनिक हथियार; जैसे—मशीनगन, टैंक, हवाई जहाज, रासायनिक हथियार आदि का प्रयोग बड़े पैमाने पर किया गया था।

प्रथम विश्वयुद्ध के प्रभाव

- युद्ध के दौरान लगभग 90 लाख लोग मारे गए और 2 करोड़ लोग घायल हो गए।
- परिवार के कमाने वाले सदस्यों के मारे जाने और घायल हो जाने के कारण पारिवारिक आय का पतन हो गया और महिलाओं को नौकरियाँ करनी पड़ीं।
- ब्रिटेन ने संयुक्त राज्य अमेरिका के बैंकों और जनता से धन की एक बहुत बड़ी राशि उधार ली। इसने संयुक्त राज्य अमेरिका को अंतर्राष्ट्रीय कर्जदार से अंतर्राष्ट्रीय ऋणदाता बना दिया।

---

2 **व्यापार अधिशेष** (Trade Surplus) वह स्थिति, जिसमें आपसी व्यापार से देश को लाभ हो, उसे व्यापार अधिशेष कहते हैं।

युद्धोत्तर सुधार

- युद्ध के बाद सुधार करना अत्यधिक कठिन था। युद्ध के बाद भारतीय बाजार में पहले जैसी स्थिति प्राप्त करना ब्रिटेन के लिए कठिन हो गया था तथा उसे जापान से भी मुकाबला करना था।
- ब्रिटेन को आर्थिक विपत्ति का सामना करना पड़ा और उस पर अत्यधिक बाहरी कर्ज का बोझ बढ़ गया। इस कारण वर्ष 1921 में प्रत्येक पाँच में से एक ब्रिटिश मजदूर के पास काम नहीं था।
- पूर्वी यूरोप से गेहूँ का निर्यात युद्ध के दौरान अवरुद्ध हो गया, फलस्वरूप कनाडा, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में गेहूँ का उत्पादन विस्तृत हो गया।
- युद्ध के बाद पूर्वी यूरोप में उत्पादन पुनर्जीवित हो गया और गेहूँ की पैदावार भरपूर हो गई।
- अनाज का मूल्य गिर गया, ग्रामीण आय का पतन हो गया और किसान कर्ज में डूब गए।

बड़े पैमाने पर उत्पादन और उपभोग

आर्थिक संकट की संक्षिप्त अवधि के बाद 1920 के दशक के प्रारंभ में संयुक्त राज्य अमेरिका की अर्थव्यवस्था फिर से मजबूत होनी शुरू हो गई। इस दौरान वृहत उत्पादन (Mass Production) का चलन अमेरिकी औद्योगिकी उत्पादन की विशेषता थी।

कारों का प्रथम वृहत उत्पादन

- कार निर्माता **हेनरी फोर्ड** ने डेट्रॉइट में अपने नए कारखाने को शिकागो के एक बूचड़खाने (Slaughter House) की 'असेंबली लाइन' के आधार पर शुरू किया। उन्होंने अनुभव किया कि यह विधि वाहनों को उत्पन्न करने का तीव्र व सस्ता माध्यम प्रदान करेगी।
- इस असेंबली लाइन ने किसी भी एक कार्य को अनवरत तथा मशीन की तरह करने के लिए कर्मचारी को बाध्य किया।
- काम की रफ्तार कन्वेयर बेल्ट की रफ्तार से तय होती थी, परिणामस्वरूप हेनरी फोर्ड की कारें तीन मिनट के अंतराल में असेंबली लाइन से निकलने लगीं। T- मॉडल नामक कार वृहत उत्पादन पद्धति से बनी देश की पहली कार थी।
- फोर्ड ने इस कार्य को करने के लिए कर्मचारियों को उच्च वेतन दिया। तीव्र उत्पादन के माध्यम से फोर्ड ने इस लागत को वापिस प्राप्त कर लिया था। अमेरिका में वर्ष 1919 में कार का उत्पादन 20 लाख था, परंतु वर्ष 1929 में यह 50 लाख हो गया।
- वृहत उत्पादन से इंजीनियरिंग आधारित सामानों की लागत व मूल्य कम हो गए; जैसे—रेफ्रिजरेटर (फ्रीज), वाशिंग मशीन, रेडियो, ग्रामोफोन, संगीत आदि।
- आवास और उपभोक्ता उछाल ने अमेरिका में रोजगार और आय के क्षेत्र बड़ी संख्या में पैदा कर दिए, परिणामस्वरूप यह सबसे बड़ा विदेशी कर्जदाता बन गया।

महामंदी

वर्ष 1929 के आस-पास महामंदी (Great Depression) शुरू हो गई और 1930 के दशक के मध्य तक बनी रही। इस अवधि के दौरान विश्व के अधिकांश देशों ने उत्पादन, रोजगार, आय और व्यापार में अत्यधिक गिरावट को अनुभव किया। सामान्यत: ऐसा माना जाता है कि इसका अत्यधिक प्रभाव कृषि क्षेत्र पर पड़ा।

महामंदी के लिए उत्तरदायी कारक एवं प्रभाव

महामंदी के लिए बहुत-से कारक उत्तरदायी थे, जो निम्न थे

- **पहला कारक** कृषि उत्पादन की अधिकता की समस्या का बने रहना था। इससे कृषि उत्पादों का मूल्य घट गया। किसान ने अपनी संपूर्ण आय को बनाए रखने के लिए उत्पादन का विकास करने का प्रयास किया। इससे स्थिति और भी खराब हो गई तथा बाजार में कृषि उत्पादों का मूल्य और भी गिर गया।
- **दूसरा कारक** 1920 के दशक के मध्य में बहुत से देशों ने अमेरिका से कर्ज लेकर अपनी निवेश संबंधी आवश्यकताओं को पूरा किया था। अमेरिकी पूँजीवादियों ने यूरोपीय देशों को ऋण देना बंद कर दिया। इससे यूरोप में कुछ प्रमुख बैंक धराशायी हो गए और मुद्रा का पतन हो गया; जैसे—स्टर्लिंग।

महामंदी द्वारा निम्न प्रभाव पड़े

- अमेरिका इस मंदी से गंभीर रूप से प्रभावित हुआ, क्योंकि बैंकों ने घरेलू ऋण वापिस लेना शुरू कर दिया। इसे **ऋण वापसी** (Back Loans) के नाम से जाना गया।
- किसान उपज नहीं बेच सके, परिवार तबाह हो गए और व्यवसाय ठप हो गए। अंतत: अमेरिका की बैंकिंग प्रणाली धराशायी हो गई, क्योंकि बैंक निवेशों, एकत्रित ऋणों तथा जमाकर्ताओं के धन को लौटा पाने में असमर्थ थे।
- अमेरिका ने आयात करों को दोगुना करके मंदी में अपनी अर्थव्यवस्था को सुरक्षित रखने का प्रयास किया, जिससे विश्व व्यापार बुरी तरह से नष्ट हो गया।

भारत और महामंदी

- महामंदी के कारण भारत के निर्यात व आयात का अध:पतन हो गया और **प्राथमिक उत्पादों**[3] (Primary Product) (जैसे—गेहूँ व जूट) का मूल्य वर्ष 1928 से 1934 के बीच तेजी से गिर गया और गेहूँ की कीमत में 50% की गिरावट दर्ज की गई।
- औपनिवेशिक सरकार ने राजस्व की माँग को कम करने से मना कर दिया, इसलिए किसान बुरी तरह से संकट में आ गए।
- इस अवधि के दौरान भारत कीमती धातुओं विशेष रूप से सोने का निर्यातक बन गया। इससे वैश्विक आर्थिक उगाही अर्थात् आर्थिक व्यवस्था को वैश्विक रूप से बढ़ावा मिला, लेकिन इससे भारतीय किसानों को बहुत कम लाभ मिला। पूरे भारत में किसानों की दशा चिंताजनक हो गई। वर्ष 1931 में ही महात्मा गाँधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को शुरू कर दिया।

---

3 **प्राथमिक उत्पाद** (Primary Product) वे उत्पाद, जो सीधे प्रकृति की सहायता से प्राप्त होते हैं, प्राथमिक उत्पाद कहलाते हैं। उदाहरण के लिए; गेहूँ तथा कपास (कृषि उत्पाद) एवं कोयला (खनिज पदार्थ)।

विश्व अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण : युद्धोत्तर काल

द्वितीय विश्वयुद्ध का परिणाम मानव के लिए आर्थिक रूप से काफी भयावह रहा। यह प्रथम विश्वयुद्ध के दो दशकों के बाद प्रारंभ हो गया। यह युद्ध **धुरी शक्तियों** (Axis Powers); नाजी जर्मनी, जापान और इटली और मित्र राष्ट्रों; ब्रिटेन, फ्रांस, सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच लड़ा गया।

इस युद्ध में कम-से-कम 6 करोड़ लोग (1939 में विश्व की जनसंख्या का लगभग 3%) मारे गए और लाखों लोग घायल हो गए।

युद्धोत्तर पुनर्निर्माण

इस युद्ध में यूरोप और एशिया के विशाल भाग और कई शहर नष्ट हो गए थे। इस युद्ध ने आर्थिक और सामाजिक तबाही को जन्म दिया। पुनर्निर्माण का कार्य लंबा और कठिन था। युद्ध के बाद के पुनर्निर्माण को आकृति प्रदान करने वाले दो प्रभाव निम्न प्रकार थे

- युद्ध के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व की प्रमुख सैन्य, राजनीतिक व आर्थिक शक्ति के रूप में उभरा।
- सोवियत संघ महाशक्ति बन गया। इसने नाजी जर्मनी को हरा दिया। इसने स्वयं को कृषि देश से विश्व शक्ति में रूपांतरित कर लिया और यह कम्युनिस्ट गुट के नेता के रूप में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ा खतरा बन गया।

युद्धोत्तर बंदोबस्त और ब्रेटन वुड्स संस्थान

युद्ध के आर्थिक अनुभवों से अर्थशास्त्रियों और राजनीतिज्ञों ने दो मुख्य परिणाम निकाले। वे थे

- **पहला परिणाम** वृहत उत्पादन पर आधारित किसी औद्योगिक समाज को व्यापक उपभोग की आवश्यकता थी। वृहत उपभोग के लिए उच्च और स्थायी आय की आवश्यकता थी तथा स्थायी आय के लिए पूर्ण रोजगार की आवश्यकता थी। इसके लिए सरकार को आवश्यक कदम उठाने चाहिए थे।
- **दूसरा परिणाम** एक देश के दूसरे देश से आर्थिक संपर्कों से संबंधित था। पूर्ण रोजगार का लक्ष्य पाया जा सकता था, यदि वस्तुओं, पूँजी और श्रम के प्रवाहों को नियंत्रण करने की शक्ति केवल सरकार के पास होती।

इस फ्रेमवर्क पर जुलाई, 1944 में अमेरिका स्थित न्यू हैम्पशर के ब्रेटन वुड्स नामक स्थान पर संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन में सहमति बनी थी।

IMF और विश्व बैंक की स्थापना

- सदस्य राष्ट्रों के बाहरी अधिशेष और घाटे से निपटने के लिए **ब्रेटन वुड्स सम्मेलन** (Bretton Woods Institute) ने **अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक कोष** (International Monetary Fund, IMF) की स्थापना की।
- युद्धोत्तर पुनर्निर्माण को वित्त पोषित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक (विश्व बैंक के नाम से जाना जाने वाला) की स्थापना की गई।
- IMF तथा विश्व बैंक को **ब्रेटन वुड्स संस्थान**[4] या ब्रेटन वुड्स ट्विन (ब्रेटन वुड्स की जुड़वाँ संतानें) भी कहा जाता है। विश्व बैंक और आई. एम. एफ. ने वर्ष 1947 से अपना कार्य करना प्रारंभ किया। इन संस्थानों की निर्णय प्रक्रिया पर पश्चिमी औद्योगिक देशों का नियंत्रण रहता है।
- अमेरिका विश्व बैंक और आई एम एफ के किसी भी फैसले को **वीटो**[5] (Veto) कर सकता है।
- अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था, राष्ट्रीय मुद्रा और मौद्रिक व्यवस्था से जोड़ने वाली व्यवस्था है। इस व्यवस्था के अंतर्गत राष्ट्रीय मुद्रा ने स्थिर **विनिमय दर**[6] (Exchange Rate) का पालन किया और अमेरिकी डॉलर स्थिर रहता था।

प्रारंभिक युद्धोत्तर वर्ष

इसके प्रारंभिक वर्ष 1950 से 1970 के बीच विश्व व्यापार की वार्षिक विकास दर 8% से भी अधिक रही। इस दौरान वैश्विक आय में भी 5% की वृद्धि देखी गई।

इस दौरान अधिकांश औद्योगिक देशों में बेरोजगारी औसतन 5% से भी कम रही। विकासशील देश भी विकसित औद्योगिक देशों के बराबर पहुँचने की कोशिश करने लगे।

अनौपनिवेशीकरण और स्वतंत्रता

जब द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हुआ, बहुत-से देश यूरोपीय औपनिवेशिक शासन के अधीन थे। अगले दो दशकों में एशिया और अफ्रीका में अधिकांश उपनिवेश स्वतंत्र हो गए और स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरे, लेकिन स्वतंत्रता उन देशों को गरीबी या संसाधनों की कमी से मुक्त नहीं कर पाई। उनकी अर्थव्यवस्थाएँ और समाज औपनिवेशिक शासन की लंबी अवधि के कारण अक्षम हो गए थे।

IMF और विश्व बैंक का गठन औद्योगिक देशों की वित्तीय जरूरतों के लिए ही किया गया था, लेकिन जैसे ही यूरोप और जापान ने अपनी अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण किया, तो ये आई एम एफ और विश्व बैंक पर अधिक निर्भर नहीं रहे। इस प्रकार 1950 के दशक के अंत से ब्रेटन वुड्स संस्थान विकासशील देशों की तरफ अपना ध्यान देने लगे।

विकासशील राष्ट्रों की दशा

- नवस्वतंत्र देश अपनी जनसंख्या को गरीबी से उभारने में लगे हुए थे, लेकिन औपनिवेशीकरण के कई वर्षों बाद भी वे अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों के द्वारा नियंत्रित थे, जोकि भूतपूर्व औपनिवेशिक शक्तियों; जैसे—अमेरिका व फ्रांस द्वारा शासित थे।
- अधिकांश विकासशील देशों ने 1950 तथा 1960 के दशक में पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं की तरह तीव्र प्रगति से लाभ नहीं उठाया। इस समस्या को देखते हुए उन्होंने एक **नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रणाली**

---

4 **ब्रेटन वुड्स संस्थान** (Bretton Woods Institute) विदेशी व्यापार में लाभ और घाटे से निपटने के लिए यह संस्थान बनाया गया, जिसमें विश्व बैंक एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना की गई।

5 **वीटो** (Veto) यह एक निषेधाधिकार है। इस अधिकार के द्वारा एक ही सदस्य की असहमति किसी भी प्रस्ताव को खारिज करने का आधार बन जाती है।

6 **विनिमय दर** (Exchange Rate) इस व्यवस्था के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की सुविधा के लिए विभिन्न देशों की राष्ट्रीय मुद्राओं को एक-दूसरे से जोड़ा जाता है। सामान्यतः विनिमय दर दो प्रकार की होती है-स्थिर विनिमय दर और परिवर्तनशील विनिमय दर।

(New International Economic Order, NIEO) के लिए माँग की और समूह-77 (G-77) के रूप में संगठित हो गए। NIEO से उनका तात्पर्य ऐसी व्यवस्था से है, जो उन्हें उनके प्राकृतिक संसाधनों पर वास्तविक नियंत्रण, अधिक विकास के लिए सहायता, कच्चे माल के लिए अनुकूल मूल्य और विकसित देशों के बाजारों में उनके तैयार माल के लिए उचित अवसर प्रदान करेगी।

ब्रेटन वुड्स का अंत और वैश्वीकरण की शुरुआत

- 1960 के दशक से अमेरिका की विदेशी भागीदारी की उभरती लागतों ने उसकी वित्तीय और प्रतिस्पर्द्धा मजबूती को कमजोर कर दिया। सोने के संबंध में अमेरिकी डॉलर अपना मूल्य बनाए न रख सका।
- अंतत: इससे **स्थिर विनिमय दर** (Fixed Exchange Rate) की व्यवस्था खराब हो गई और **अस्थायी विनिमय दर** (Floating Exchange Rates) की व्यवस्था शुरू हो गई।

अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय व्यवस्था में परिवर्तन

- 1970 के दशक के मध्य से अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली बदल गई। अब तक विकासशील देशों पर पश्चिमी वाणिज्यिक बैंकों और व्यक्तिगत (निजी) ऋण संस्थाओं से उधार लेने के लिए दबाव बनाया गया।
- इससे आवधिक ऋण संकट व बेरोजगारी बढ़ गई अर्थात् आय में गिरावट आ गई, जिससे अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और औद्योगिक विश्व में भी गरीबी में वृद्धि हो गई। 1970 के दशक के अंत से बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भी कम वेतन वाले एशियायी देशों में अपने उत्पादन केंद्र विस्थापित करने लगीं।

चीन में नई आर्थिक नीति

- चीन अपनी वर्ष 1949 की क्रांति से विश्व की युद्धोत्तर अर्थव्यवस्था से अलग-थलग था, परंतु चीन में नई आर्थिक नीतियों और सोवियत संघ के विघटन तथा पूर्वी यूरोप में सोवियत शैली साम्यवाद के समाप्त हो जाने के बाद बहुत-से देश वापस विश्व अर्थव्यवस्था के अंग बन गए।
- चीन जैसे देशों में विकसित देशों की अपेक्षा वेतन तुलनात्मक रूप से कम था।
- इससे प्रभावित होकर विश्व की अधिकांश कंपनियाँ अपनी प्रतिस्पर्द्धा को कायम रखने के लिए वहाँ निवेश करने लगीं।
- अंतिम दो दशकों में चीन, भारत और ब्राजील जैसे देशों ने द्रुतगति से आर्थिक विकास में उपलब्धियाँ हासिल कीं।

चैप्टर प्रैक्टिस

भाग 1

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

• बहुविकल्पीय प्रश्न

1. प्राचीनकाल में दुनिया के सुदूर क्षेत्रों के बीच व्यापारिक और सांस्कृतिक संपर्कों का जीवंत उदाहरण था

(a) जिबाल्टर मार्ग
(b) सिल्क मार्ग
(c) उत्तरार्द्ध मार्ग
(d) भूमध्यसागरीय मार्ग

उत्तर (b) सिल्क मार्ग प्राचीनकाल में दुनिया के सुदूर क्षेत्रों के बीच व्यापारिक और सांस्कृतिक संपर्कों का जीवंत उदाहरण था। इस मार्ग के माध्यम से यूरोपीय देशों का व्यापार विश्व के अन्य महाद्वीपों तक विस्तारित हुआ।

2. किस स्थान से नूडल्स पश्चिम में पहुँचा, जहाँ उससे स्पैघेत्ती का जन्म हुआ?

(a) सिंगापुर (b) कोरिया
(c) चीन (d) मंगोलिया

उत्तर (c) चीन से नूडल्स पश्चिम देशों में पहुँचा, जहाँ उसके कारण स्पैघेत्ती का जन्म हुआ। स्पैघेत्ती का तात्पर्य शीघ्र तैयार होने वाले खाद्य पदार्थों से है।

3. यूरोपीय नाविकों ने एशिया और अमेरिका तक समुद्री मार्ग की खोज किस शताब्दी में की थी?

(a) 12वीं शताब्दी
(b) 16वीं शताब्दी
(c) 17वीं शताब्दी
(d) 20वीं शताब्दी

उत्तर (b) 16वीं शताब्दी

4. यूरोप के किस देश ने कृषि उत्पादों के आयात पर रोक लगाने के लिए कॉर्न लॉ को लागू किया था?

(a) फ्रांस (b) ब्रिटेन
(c) स्पेन (d) इटली

उत्तर (b) ब्रिटेन ने कृषि उत्पादों के आयात पर पाबंदी लगाने के लिए कॉर्न लॉ को लागू किया था। हालाँकि उद्योगपतियों तथा शहरी व्यक्ति के विरोध के कारण कॉर्न लॉ को समाप्त कर दिया गया। इसके पश्चात् बहुत कम कीमतों पर खाद्य पदार्थों का आयात किया जाने लगा।

5. दिए गए युग्मों में से सही युग्म की पहचान करें

घटना		वर्ष
(a) आयरलैंड में आलू संकट	-	1840
(b) वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था का विकास	-	1898
(c) अनुबंधित श्रम प्रथा का उन्मूलन	-	1925
(d) वैश्विक महामंदी	-	1935

उत्तर (a) आयरलैंड में आलू संकट 1840 ई. में आया था। वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था का विकास 1890 ई. में तथा अनुबंधित श्रम प्रथा का उन्मूलन वर्ष 1921 में हुआ। वैश्विक महामंदी वर्ष 1929 में आई थी।

6. निम्नलिखित कथनों का अध्ययन कर सही उत्तर का चयन करें

- भोजन की कीमत में गिरावट के कारण खपत में वृद्धि हुई।
- ब्रिटेन में आयातित वस्तु का दाम उत्पादित वस्तु से कम हो गया।
- ब्रिटेन में शहरों की तरफ व्यक्तियों का पलायन हुआ।

(a) वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था (b) कॉर्न लॉ
(c) आलू अकाल (d) वैश्विक मंदी

उत्तर (b)

7. मवेशियों में प्लेग की तरह फैलने वाली बीमारी रिंडरपेस्ट का संबंध किस महाद्वीप से था?

(a) यूरोप (b) अफ्रीका
(c) अमेरिका (d) एशिया

उत्तर (b) मवेशियों में प्लेग की तरह फैलने वाली बीमारी रिंडरपेस्ट का संबंध अफ्रीका महाद्वीप से था। इस बीमारी का 1890 के दशक में प्रकोप रहा था। इस बीमारी का वहाँ के लोगों की आजीविका तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा था।

8. दिए गए युग्मों में से गलत युग्म की पहचान करें

(a) IMF का कार्यशील वर्ष	—	वर्ष 1947
(b) प्रथम विश्वयुद्ध की शुरुआत	—	वर्ष 1914
(c) विश्व व्यापार संगठन की स्थापना	—	वर्ष 1995
(d) ब्रेटन वुड्स समझौता	—	वर्ष 1945

उत्तर (d) ब्रेटन वुड्स समझौता वर्ष 1944 में हुआ था। इस समझौते के पश्चात् ही अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष तथा विश्व बैंक की स्थापना की गई थी।

9. अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक समस्याओं से निपटने के लिए ………… की स्थापना की गई थी।

(a) संयुक्त राष्ट्र संघ
(b) अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक कोष
(c) अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक
(d) G-77 का गठन

उत्तर (b) अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक कोष

10. .... देशों ने अर्थव्यवस्थाओं की तीव्र प्रगति के लिए नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रणाली की शुरुआत की थी।

(a) विकसित (b) विकासशील
(c) अल्पविकसित (d) नवस्वतंत्र

उत्तर (b) विकासशील देशों ने 1950 तथा 1960 के दशक में अर्थव्यवस्थाओं की तीव्र प्रगति के लिए नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रणाली की शुरुआत की थी। इस प्रणाली का मुख्य उद्देश्य विकासशील देशों को आर्थिक क्षेत्र में स्वतंत्रता प्रदान करना था।

11. निम्नलिखित कथनों का अध्ययन कर सही उत्तर का चयन करें

- ब्रिटेन में सूती वस्त्र पर अत्यधिक सीमा शुल्क लगाया गया।
- भारतीय वस्त्रों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्द्धा का सामना करना पड़ा।
- भारत की अफीम का चीन को निर्यात किया जाता था।

(a) उपनिवेशवाद (b) भौतिकवाद
(c) व्यापार में वृद्धि (d) संरक्षणवाद

उत्तर (a) उपनिवेशवाद

12. सुमेलित करें

सूची I	सूची II
A. केनाल कॉलोनी	1. नहर बस्ती
B. होसे	2. त्रिनिदाद में मुहर्रम जुलूस
C. कौड़िया	3. प्राचीन समय की मुद्रा
D. होम चार्जेज	4. व्यापार की वस्तुओं पर विविध खर्च

कूट

	A	B	C	D		A	B	C	D
(a)	3	2	4	1	(b)	4	3	2	1
(c)	1	2	3	4	(d)	2	3	4	1

उत्तर (c) पंजाब में नई नहरों के किनारे बसी बस्तियों को केनाल कॉलोनी कहा जाता था। त्रिनिदाद में मुहर्रम के सालाना जुलूस को होसे के नाम से जाना जाता था। प्राचीनकाल में मुद्रा के रूप में प्रयोग की जाने वाली वस्तु को कौड़िया कहा जाता था। किसी देश के द्वारा व्यापार के लिए बनाई गई वस्तु पर विविध खर्च होम चार्जेज कहलाता था।

13. निम्नलिखित कथनों का अध्ययन कर सही कूट का चुनाव करें

1. भारतीय व्यापारियों और महाजनों ने भी अफ्रीका में यूरोपीय उपनिवेशवादियों का अनुसरण किया।
2. ब्रिटेन ने अफीम की बिक्री से प्राप्त धन को भारत के औद्योगीकरण के लिए उपयोग किया।
3. प्रथम विश्वयुद्ध मित्र राष्ट्रों तथा धुरी राष्ट्रों के मध्य लड़ा गया था।

कूट

(a) 1 और 2 (b) 2 और 3
(c) 1 और 3 (d) 1, 2 और 3

उत्तर (c) भारतीय व्यापारियों और महाजनों ने भी अफ्रीका में यूरोपीय उपनिवेशवाद का अनुसरण किया। इसके अंतर्गत उन्होंने बंदरगाहों पर बड़े-बड़े एंपोरियम का विकास किया। प्रथम विश्वयुद्ध मित्र राष्ट्रों (ब्रिटेन, फ्रांस तथा रूस) तथा धुरी राष्ट्रों (जर्मनी, ऑस्ट्रिया व हंगरी) के मध्य हुआ था। ब्रिटेन ने अफीम से प्राप्त धन को चाय पर पूँजी लगाने तथा चीन से अन्य आयातित वस्तुओं के लिए प्रयोग किया था।

14. इस चित्र का निर्माण 1875 ई. में किया गया था। इस चित्र में ट्रांसवाल स्वर्ण खदानों में मजदूरों को काम करता दिखाया गया है। इन मजदूरों को एशिया से भी आयातित किया जाता है। इस स्वर्ण खदान का संबंध किस देश से है?

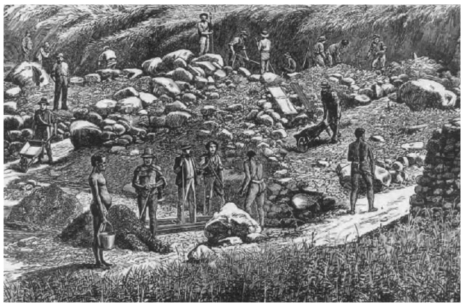

(a) इंडोनेशिया (b) दक्षिण अफ्रीका
(c) अमेरिका (d) चीन

उत्तर (b) दक्षिण अफ्रीका

कथन-कारण प्रश्न

निर्देश (प्र.सं. 15-19) नीचे दो कथन दिए गए हैं। एक कथन (A) और दूसरा कारण (R) है। दिए गए कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन करें

कूट

(a) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है
(b) A और R दोनों सही हैं, परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है
(c) A सही है, किंतु R गलत है
(d) A गलत है, किंतु R सही है

15. **कथन** (A) संपूर्ण 19वीं शताब्दी में भारतीय बाजार में ब्रिटिश निर्माणकर्ताओं की अधिकता हो गई।

कारण (R) भारत से निर्मित वस्तुओं के निर्यात में वृद्धि से ब्रिटेन को आर्थिक लाभ प्राप्त हुआ।

उत्तर (a) संपूर्ण 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश निर्माणकर्ताओं की भारतीय बाजारों में अधिकता थी, क्योंकि भारत में कच्चे माल की अधिक उपलब्धता तथा मजदूरी के कम होने से निर्मित वस्तु की कीमत कम होती थी, जो ब्रिटिश उद्योगपतियों के लिए लाभकारी थी। वे इन वस्तुओं का अन्य देशों में निर्यात कर अधिक लाभ कमाते थे। अतः A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

16. **कथन** (A) महामंदी का भारत की अर्थव्यवस्था पर सीधा प्रभाव पड़ा।

कारण (R) महामंदी के कारण भारत के निर्यात व आयात का अध: पतन हो गया तथा प्राथमिक उत्पादों का मूल्य गिर गया।

उत्तर (a) महामंदी का भारत की अर्थव्यवस्था पर सीधा प्रभाव पड़ा, जिसके कारण किसान तथा काश्तकार को अधिक नुकसान हुआ, क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में कृषि उत्पादों के मूल्य में अत्यधिक कमी आई। परिणामस्वरूप आयात-निर्यात का अध: पतन हो गया। अतः A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

17. कथन (A) द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक कोष तथा विश्व बैंक की स्थापना की गई थी।

कारण (R) इन संस्थानों की निर्णय प्रक्रिया पर पश्चिमी औद्योगिक देशों का नियंत्रण था।

उत्तर (a) द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक कोष तथा विश्व बैंक की स्थापना की गई। इन संस्थानों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य युद्धोपरांत पश्चिम विश्व के देशों की अर्थव्यवस्था में सुधार करना था। इस कारण इन संस्थाओं की निर्णय प्रक्रिया पर पश्चिमी औद्योगिक देशों का नियंत्रण था। अतः A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

18. कथन (A) द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् विश्व व्यापार की वार्षिक विकास दर 8% से भी अधिक रही थी।

कारण (R) इस समय अधिकांश औद्योगिक देशों में बेरोजगारी की दर 8% से कम रह गई थी।

उत्तर (c) द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् वर्ष 1950-70 के बीच विश्व व्यापार की वार्षिक विकास दर 8% से अधिक रही है। इस दौरान वैश्विक आय में लगभग 5% की दर से वृद्धि हो रही थी। इस दौरान ज्यादातर समय अधिकांश औद्योगिक देशों में बेरोजगारी औसतन 5% से भी कम हो रही। अतः A सही है, किंतु R गलत है।

19. कथन (A) आर्थिक क्रांति के अंतर्गत चीन में वेतन तुलनात्मक रूप से कम था।

कारण (R) विश्व की अधिकतर कंपनियों ने चीन में निवेश प्रारंभ किया।

उत्तर (a) आर्थिक क्रांति के अंतर्गत चीन जैसे देशों में विकसित देशों की अपेक्षा वेतन तुलनात्मक रूप से कम था। इस कारण विश्व की अधिकांश कंपनियाँ अपनी प्रतिस्पर्द्धा को कायम रखने के लिए वहाँ निवेश करने लगीं। अतः A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

• केस स्टडी आधारित प्रश्न

निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

अठारहवीं सदी के आखिरी दशकों में ब्रिटेन की आबादी तेज़ी से बढ़ने लगी थी। नतीजा, देश में भोजन की माँग भी बढ़ी। जैसे-जैसे शहर फैले और उद्योग बढ़ने लगे, कृषि उत्पादों की माँग भी बढ़ने लगी। कृषि उत्पाद महँगे होने लगे। दूसरी तरफ बड़े भूस्वामियों के दबाव में सरकार ने मक्का के आयात पर भी पाबंदी लगा दी थी। जिन कानूनों के सहारे सरकार ने यह पाबंदी लागू की थी, उन्हें 'कॉर्न लॉ' कहा जाता था। खाद्य पदार्थों की ऊँची कीमतों से परेशान उद्योगपतियों और शहरी बाशिंदों ने सरकार को मजबूर कर दिया कि वह कॉर्न लॉ को फ़ौरन समाप्त कर दे।

कॉर्न लॉ के निरस्त हो जाने के बाद बहुत कम कीमत पर खाद्य पदार्थों का आयात किया जाने लगा। आयातित खाद्य पदार्थों की लागत ब्रिटेन में पैदा होने वाले खाद्य पदार्थों से भी कम थी। फलस्वरूप, ब्रिटिश किसानों की हालत बिगड़ने लगी, क्योंकि वे आयातित माल की कीमत का मुकाबला नहीं कर सकते थे। विशाल भूभागों पर खेती बंद हो गई। हजारों लोग बेरोज़गार हो गए। गाँवों से उजड़कर वे या तो शहरों में या दूसरे देशों में जाने लगे।

जब खाद्य पदार्थों की कीमतों में गिरावट आई तो ब्रिटेन में उपभोग का स्तर बढ़ गया। उन्नीसवीं सदी के मध्य से ब्रिटेन की औद्योगिक प्रगति काफी तेज़ रही, जिससे लोगों की आय में वृद्धि हुई। इससे लोगों की ज़रूरतें बढ़ीं। खाद्य पदार्थों का और भी ज्यादा मात्रा में आयात होने लगा। पूर्वी यूरोप, रूस, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया, दुनिया के हर हिस्से में ब्रिटेन का पेट भरने के लिए जमीनों को साफ करके खेती की जाने लगी।

इस सारे कामों के लिए पूँजी और श्रम की ज़रूरत थी। इसके लिए लंदन जैसे वित्तीय केंद्रों से पूँजी आने लगी। अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया जैसे जिन स्थानों पर मज़दूरों की कमी थी वहाँ लोगों को ले जाकर बसाया जाने लगा यानी श्रम का प्रवाह होने लगा। उन्नीसवीं सदी में यूरोप के लगभग पाँच करोड़ लोग अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में जाकर बस गए। माना जाता है कि पूरी दुनिया में लगभग पंद्रह करोड़ लोग बेहतर भविष्य की चाह में अपने घर-बार छोड़कर दूर-दूर के देशों में जाकर काम करने लगे थे।

(i) कॉर्न लॉ की समाप्ति से किस वर्ग को सर्वाधिक लाभ प्राप्त हुआ?
(a) कृषक वर्ग को
(b) जमींदार वर्ग को
(c) उद्योगपतियों एवं शहरी सामान्य वर्ग को
(d) सैन्य अधिकारी वर्ग को

उत्तर (c) कॉर्न लॉ की समाप्ति से उद्योपतियों और शहरी सामान्य वर्ग को सर्वाधिक लाभ प्राप्त हुआ। ब्रिटेन के कुछ उद्योगपति तथा शहरों के सामान्य वर्ग, खाद्य पदार्थों की ऊँची कीमतों से अत्यधिक परेशान थे, जिस कारण उन्होंने कॉर्न लॉ का विरोध किया था।

(ii) कॉर्न लॉ की समाप्ति ने किसानों पर किस प्रकार के नकारात्मक प्रभाव डाले?
(a) किसानों ने खेती करना बंद कर दिया
(b) कृषक समुदाय में बेरोजगारी की स्थिति उत्पन्न हो गई
(c) गाँवों से किसान वर्ग पलायन करने लगे
(d) उपरोक्त सभी

उत्तर (d) उपरोक्त सभी

(iii) ब्रिटेन की किस आवश्यकता ने कृषि गतिविधियों को प्रोत्साहन प्रदान किया?
(a) वैश्विक खाद्य संकट को दूर करना
(b) कृषि उत्पाद निर्यात को प्रोत्साहित करना
(c) ब्रिटेन को अधिक-से-अधिक खाद्य आपूर्ति प्रदान करना
(d) कृषि प्रधान देशों की आर्थिक स्थिति को मजबूत करना

उत्तर (c) ब्रिटेन की अधिक-से-अधिक खाद्य आवश्यकता ने कृषि गतिविधियों को प्रोत्साहन प्रदान किया। यूरोपीय साम्राज्यवादी शक्तियों की खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पूर्वी यूरोप, रूस, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में जमीन को साफ करके खेती की जाने लगी। जिसके पश्चात् बिट्रेन के लोगों का इन स्थानों पर भी प्रवास होने लगा था।

(iv) 19वीं सदी के मध्य के दौरान अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में अधिक लोगों को बसाए जाने का मुख्य कारण क्या था?
(a) इन देशों में विकास की संभावना अधिक थी
(b) इन देशों में खेतिहर श्रमिकों की संख्या बेहद कम थी
(c) यूरोपीय देशों में अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गई थी
(d) इन देशों में खनन कार्य का विकास तेज़ी से हुआ।

उत्तर (b) इन देशों में खेतिहर श्रमिकों की संख्या बेहद कम थी।

(v) **कथन** (A) 19वीं सदी के अंतर्गत ब्रिटेन में औद्योगिक प्रगति का विस्तार अत्यधिक तीव्रता के साथ होने लगा।

कारण (R) इसके कारण ब्रिटेन के लोगों की आवश्यकता बढ़ने लगी, जिस कारण इंग्लैंड को अन्य देशों से विलासिता की वस्तु का आयात करना पड़ा।

कूट

(a) A और R दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है
(b) A और R दोनों सही हैं, परंतु R की सही व्याख्या नहीं करता है
(c) A सही है, किंतु R गलत है
(d) A गलत है, किंतु R सही है

उत्तर (b) 19वीं सदी के अंतर्गत ब्रिटेन में औद्योगिक प्रगति का विस्तार अत्यधिक तीव्रता के साथ होने लगा, जिसके कारण ब्रिटेन में शहरी जनसंख्या तीव्रता से बढ़ने लगी तथा ब्रिटेन के लोगों की आवश्यकता में वृद्धि हुई। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ब्रिटेन ने कृषि उत्पादों का आयात किया, जिसके द्वारा जनसंख्या की आवश्यकता को पूरा किया गया।

(vi) ब्रिटेन ने श्रम प्रवाह को किन देशों तक विस्तारित किया था?

(a) ऑस्ट्रेलिया और भारत
(b) ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका
(c) ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका
(d) अमेरिका और रूस

उत्तर (c) ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका

भाग 2

वर्णनात्मक प्रश्न

• लघु उत्तरीय प्रश्न

1. तीन उदाहरण देते हुए बताइए कि अमेरिका की ओर जाने के लिए नए समुद्री रास्ते की खोज से विश्व में परिवर्तन आया। (CBSE 2012, 11, 10)

उत्तर अमेरिका की ओर जाने के लिए नए समुद्री मार्गों की खोज से विश्व में आए परिवर्तन निम्नलिखित थे

(i) अमेरिका द्वारा समुद्री मार्गों की खोज से पूर्व लाखों वर्षों तक अमेरिका का दुनिया के अन्य भागों से संपर्क नहीं था।

(ii) वर्तमान पेरू और मैक्सिको में उपलब्ध खानों से निकलने वाली कीमती धातुओं खासतौर से चाँदी ने यूरोप की संपदा को बढ़ाया और पश्चिम एशिया के साथ होने वाले व्यापार को भी नई दिशा प्रदान की।

(iii) समुद्री मार्गों की खोज के कारण तीन प्रकार के प्रवाहों का उदय हुआ। ये प्रवाह हैं—वस्तुओं का प्रवाह, श्रम का प्रवाह तथा पूँजी का प्रवाह।

2. 19वीं शताब्दी में हजारों लोग यूरोप से भागकर अमेरिका क्यों आ गए थे? (CBSE 2019)

उत्तर 19वीं शताब्दी में हजारों लोग यूरोप से भागकर अमेरिका आ गए, इसके पीछे निम्नलिखित कारण थे

- 19वीं शताब्दी तक यूरोप में गरीबी और भूख का साम्राज्य था।
- शहरी क्षेत्रों में भीड़ अधिक थी तथा संक्रामक रोगों का प्रकोप था।
- इस समय यूरोप में धार्मिक विवादों का बोलबाला था, धार्मिक असंतुष्टों को दंडित किया जा रहा था।

3. 17वीं सदी से पहले होने वाले आदान-प्रदान के दो उदाहरण दीजिए। एक उदाहरण एशिया से और एक उदाहरण अमेरिका महाद्वीपों के बारे में चुनें। (NCERT)

उत्तर 17वीं सदी से पूर्व एशिया तथा अमेरिका के दो प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं

(i) **आहार या भोज्य पदार्थों का आदान-प्रदान** खाद्य पदार्थों का आदान-प्रदान सांस्कृतिक आदान-प्रदान का भी उदाहरण है, जो एक देश के यात्रियों द्वारा दूसरे देशों या महाद्वीपों में जाने-अनजाने में पहुँचा दिया गया। इसी तरह चीनी रेशम का व्यापार में कितना महत्त्वपूर्ण स्थान था, इसका पता बहुत सारे सिल्क मार्गों से चलता है, जो 15वीं सदी में अस्तित्व में आ चुके थे। इन रास्तों से ही चीनी पॉटरी एवं अन्य सामग्री अन्य महाद्वीपों में पहुँचाई जाती थी।

(ii) **बीमारी या कीटाणुओं का आदान-प्रदान** 16वीं शताब्दी के मध्य तक पुर्तगाली एवं स्पेनिश सेनाओं ने अमेरिका को उपनिवेश बनाना शुरू किया। इस दौरान ही व्यापार के साथ बीमारी एवं कीटाणुओं का भी प्रसार हुआ। चेचक जैसी बीमारी अमेरिका के लिए मारक सिद्ध हुई, जो एशियायी देशों से यहाँ तक पहुँची थी।

4. बताइए कि पूर्व-आधुनिक विश्व में बीमारियों के वैश्विक प्रसार ने अमेरिकी भू-भागों के उपनिवेशीकरण में किस प्रकार मदद की? (NCERT, CBSE 2008)

उत्तर पूर्व-आधुनिक विश्व में बीमारियों के वैश्विक प्रसार ने अमेरिकी भू-भागों के उपनिवेशीकरण में निम्न प्रकार से सहायता की

- अमेरिका में उपनिवेशीकरण के प्रारंभ में पुर्तगाली और स्पेनिश सेना चेचक जैसी बीमारी को अपने साथ लेकर अमेरिका पहुँची। लाखों साल से दुनिया से अलग-थलग रहने के कारण अमेरिका के लोगों के शरीर में यूरोप से आने वाली इन बीमारियों से बचने की रोग-प्रतिरोधी क्षमता नहीं थी।
- यह बीमारी अमेरिका में मृत्यु कारक साबित हुई। जो एक बार संक्रमण होने के बाद तो संपूर्ण महाद्वीप में फैल गई। इस प्रकार इस बीमारी ने औपनिवेशिक शक्ति के जीत का रास्ता आसान बना दिया।
- अमेरिका महाद्वीप पर इस बीमारी का इलाज भी उपलब्ध नहीं था। हालाँकि स्पेन तथा पुर्तगाली सैनिकों के पास इससे बचाव का तरीका भी था और उनके शरीर में रोग-प्रतिरोधी क्षमता भी विकसित हो चुकी थी।

5. अठारहवीं सदी के आखिरी दशक में ब्रिटेन को तेजी से बढ़ती हुई आबादी के किन्हीं तीन प्रभावों को स्पष्ट कीजिए। (CBSE 2020)

उत्तर अठारहवीं सदी के आखिरी दशक में ब्रिटेन की तेजी से बढ़ती हुई आबादी के प्रभाव निम्नलिखित हैं

(i) ब्रिटेन की तेजी से बढ़ती हुई आबादी ने भोजन की माँग में बढ़ोतरी की, जिससे कृषि उत्पादों की माँग में वृद्धि की।

(ii) ब्रिटेन की तेजी से बढ़ती हुई आबादी ने ब्रिटेन के किसानों को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया, जिसके कारण लाखों किसान बेरोजगार हो गए।

(iii) ब्रिटेन की तेजी से बढ़ती हुई आबादी ने अफ्रीका तथा ऑस्ट्रेलिया के कृषि क्षेत्र में इजाफा किया, जिसके कारण यहाँ अधिक लोगों का प्रवास होने लगा।

6. 19वीं शताब्दी के दौरान ब्रिटेन में जमीन को साफ कराने की आवश्यकता क्यों पड़ी? उल्लेख कीजिए। **(CBSE 2018)**

उत्तर 19वीं शताब्दी के दौरान ब्रिटेन में जमीन को साफ कराने की आवश्यकता के निम्नलिखित कारण थे

- **खाद्यान्नों की बढ़ती माँग** ब्रिटेन की बढ़ती जनसंख्या के कारण खाद्यान्नों की माँग बढ़ने लगी जिसकी पूर्ति के लिए वहाँ की जमीनों को साफ करवाना पड़ा जिससे कृषि को बढ़ाया जा सके।
- **रेलवे परिवहन की आवश्यकता** खेतिहर क्षेत्रों को बंदरगाहों से जोड़ने के लिए रेलवे की आवश्यकता थी। यही कारण था कि नई रेलवे लाइनें बिछाने के लिए जमीनों को साफ करवाना पड़ा।
- **नए बंदरगाह का निर्माण** अधिक संख्या में माल ढुलाई के लिए नई गोदियाँ बनाई गईं तथा पुरानी गोदियों का विस्तार किया गया। इससे कृषि व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया गया।

7. कॉर्न लॉ के समाप्त होने के बाद ब्रिटेन में खाद्य समस्या का समाधान कैसे हुआ? व्याख्या कीजिए। **(CBSE 2019)**

उत्तर कॉर्न लॉ के समाप्त होने के बाद ब्रिटेन में खाद्य समस्या का समाधान निम्नलिखित रूपों में हुआ

- **खाद्य पदार्थों का पुनः आयात** कॉर्न लॉ के प्रतिबंध के समाप्त होते ही ब्रिटेन अपने देश में उत्पादन करने की अपेक्षा सस्ते दामों पर खाद्यान्नों का आयात करने लगा। यह आयात व्यापारियों द्वारा पूर्वी यूरोप, रूस, अमेरिका तथा ऑस्ट्रेलिया आदि देशों से सस्ते दामों पर होता था।
- **वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था** 1890 तक एक वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था सामने आ चुकी थी। इस घटनाक्रम के साथ ही श्रम विस्थापन रुझानों, पूँजी प्रवाह, पारिस्थितिकी और तकनीक में गहरे बदलाव आ चुके थे।
- **केनाल कॉलोनियों से खाद्य पदार्थों का आयात** ब्रिटिश भारतीय सरकार ने अर्द्ध-रेगिस्तानी परती जमीनों को उपजाऊ बनाने के लिए नहरों का जाल बिछा दिया जिससे निर्यात के लिए गेहूँ और कपास की खेती की जा सके।

8. बीसवीं सदी के प्रारंभ में भारत पर महामंदी के प्रभावों को स्पष्ट कीजिए। **(CBSE 2020)**

उत्तर बीसवीं सदी के प्रारंभ में भारत पर महामंदी के प्रभाव निम्नलिखित हैं

- वर्ष 1928 से 1934 के बीच देश के आयात-निर्यात घटकर लगभग आधा रह गया था। जब अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कीमतें गिरने लगीं, तो भारत में भी कीमतें नीचे आ गईं। वर्ष 1928 से 1934 के बीच भारत में गेहूँ की कीमत 50% गिर गई।
- महामंदी के कारण भारतीय शहरी वर्ग की अपेक्षा किसानों और काश्तकारों को ज्यादा नुकसान हुआ। यद्यपि महामंदी के कारण कृषि उत्पादों की कीमतें तेजी से नीचे गिरीं, लेकिन सरकार ने लगान वसूली में छूट देने से साफ इंकार कर दिया। इसमें सबसे अधिक प्रभाव उन काश्तकारों पर पड़ा, जो विश्व बाजार के लिए अनाज उत्पादित करते थे।
- महामंदी के कारण काश्तकार पहले से भी ज्यादा कर्ज में डूब गए। खर्चे पूरे करने के लिए उनकी बचत खत्म हो चुकी थी।
- महामंदी के काल में भारत कीमती धातुओं विशेष रूप से सोने का निर्यात करने लगा। जिसने वैश्विक अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने में काफी मदद मिली। इस निर्यात ने ब्रिटेन की आर्थिक दशा सुधारने में से तो निश्चय ही मदद दी, लेकिन भारतीय किसानों को कोई लाभ नहीं हुआ।

9. ''तकनीकी विकास ने मांस परिवहन को आसान बनाया।'' इस कथन की पुष्टि करें।

उत्तर यह कथन सत्य है कि तकनीकी विकास ने मांस परिवहन को आसान बनाया। तकनीकी विकास के कारण रेफ्रिजरेटिड जहाजों ने खराब होने वाले खाद्य पदार्थों को लंबी दूरी तक पहुँचाने में काफी सहायता की। जमा हुआ मांस अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड से विभिन्न यूरोपीय देशों तक निर्यात किया गया। इससे यूरोपीय बाजार में मांस का मूल्य कम हो गया और मांस (कभी-कभी मक्खन और अंडा) निर्धनों के लिए प्रतिदिन का आहार बन गया। इस बेहतर आजीविका की स्थिति ने देश के अंदर सामाजिक शांति उत्पन्न कर दी और उपनिवेशों में साम्राज्यवाद को समर्थन मिला।

10. 'रिंडरपेस्ट' का 1890 के दशक में अफ्रीका के लोगों की आजीविका और स्थानीय अर्थव्यवस्था पर पड़े प्रभावों का वर्णन कीजिए। **(CBSE 2018)**

'अफ्रीका में रिंडरपेस्ट का आना' पर संक्षिप्त टिप्पणी करें। **(NCERT)**

उत्तर 1890 के दशक में अफ्रीका में रिंडरपेस्ट नामक बीमारी बहुत तेजी से फैली। यह बीमारी मवेशियों में प्लेग की तरह फैलने वाली थी। इसके द्वारा लोगों की आजीविका और स्थानीय अर्थव्यवस्था पर पड़े प्रभाव को निम्न रूपों में देखा जा सकता है

- इस पशु महामारी ने पशुओं की एक बहुत बड़ी संख्या को समाप्त कर दिया, जिससे लोगों की आजीविका अत्यंत प्रभावित हुई।
- संपूर्ण अफ्रीका में यह बीमारी इस प्रकार फैली कि इससे लगभग 90% पशु मारे गए, इससे लोगों की आजीविका व अफ्रीका की स्थानीय अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।
- रिंडरपेस्ट बीमारी के कारण नष्ट हुई अफ्रीकी अर्थव्यवस्था ने औपनिवेशिक शक्ति को अफ्रीका में आकर्षित किया।

11. यूरोपियों के आगमन से पूर्व अफ्रीकी लोगों के जीवन की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। **(CBSE 2013)**

उत्तर यूरोपियों के आगमन से पूर्व अफ्रीकी लोगों के जीवन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित थीं

- इस समय अफ्रीका की जनसंख्या यूरोप की तुलना में कम तथा भूमि विस्तार अपेक्षाकृत बहुत अधिक था।
- यहाँ अनेक शताब्दियों तक लोगों का जीवन जमीन एवं पालतू पशुओं के सहारे ही चलता रहा। यहाँ काम के बदले वेतन का चलन नहीं था।
- यहाँ अधिकांश किसान थे, जिन्हें आधुनिक वेतन का ज्ञान नहीं था।
- इनका मुख्य व्यवसाय कृषि तथा पशुपालन था। ग्रामीण परिवार आत्मनिर्भर थे।

12. यूरोपीय मालिकों को अफ्रीकी मजदूरों को तैयार करना कठिन क्यों हो रहा था? उन तरीकों का वर्णन कीजिए जिनके द्वारा वे मजदूरों को प्रशिक्षित करते और रोकते थे। **(CBSE 2011)**

उत्तर यूरोपीय उपनिवेश के दौरान यूरोपीय मालिकों को लोगों को मजदूरी के लिए प्रशिक्षित करना कठिन हो रहा था, क्योंकि इसमें अधिकांशतः अफ्रीकी लोग थे। यूरोपीय मालिकों को कब्जे में रखने तथा प्रशिक्षित करने के लिए निम्न उपाय करने पड़े

- **उत्तराधिकार कानून में परिवर्तन** यूरोपीय सरकार ने किसानों को उनकी जमीन से बेदखल करने के लिए उत्तराधिकार का पुराना कानून बदलकर एक नया कानून बनाया।
- **कर बढ़ाना** उपनिवेशकारों ने यहाँ की जनता पर भारी कर लगाना प्रारंभ कर दिया जिसे चुकाने के लिए उन्हें बागानों एवं खानों में वेतन के लिए मजदूरी करनी पड़ती थी।
- **स्वतंत्रता पर प्रतिबंध** खानों में काम करने वाले लोगों को बाड़ों में बंद कर दिया जाता था और उनके स्वतंत्रतापूर्वक कहीं भी आने जाने पर पाबंदी लगा दी गई।

13. 19वीं शताब्दी में सांस्कृतिक दृश्य में हुए परिवर्तनों की विशेषताओं को बताइए।

उत्तर 19वीं शताब्दी में सांस्कृतिक दृश्य में हुए परिवर्तनों की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

- 19वीं शताब्दी में अनुबंध को 'दासता की एक नई प्रथा' के रूप में वर्णित किया गया। यद्यपि जीवन जीने और कार्य करने की दशाएँ कठोर थीं, फिर भी कर्मचारियों ने जीने के अपने स्वयं के तरीके तलाश लिए।
- उन्होंने अपने विभिन्न सांस्कृतिक रूपों का मिश्रण करके मनोरंजन के अन्य रूपों तथा त्योहारों के नए रूपों का विकास किया।
- त्रिनिदाद में रियटस कार्निवाल (होसे), रास्ताफारियानवाद (जमैका की एक आध्यात्मिक विचारधारा) का विरोधी धर्म, जिसे जमैका के गायक बॉब मार्ले, त्रिनिदाद और गुयाना के चटनी संगीत ने प्रसिद्ध बना दिया आदि सभी सांस्कृतिक सम्मिश्रण के ही उदाहरण हैं।

14. भारत और ब्रिटेन के मध्य व्यापारिक संबंधों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 19वीं शताब्दी में भारतीय बाजार में ब्रिटिश निर्माणकर्ताओं की अधिकता हो गई। खाद्यान्न और कच्चा माल, जो भारत से निर्यात किया जाता था, उसकी ब्रिटेन में वृद्धि हो गई। भारत द्वारा ब्रिटेन को भेजे जाने वाले माल की अपेक्षा ब्रिटेन से भारत भेजे जाने वाले माल की दरें ऊँची होती थीं। इस प्रकार ब्रिटेन भारत के साथ व्यापार अधिशेष में रहता था और इस अधिशेष का प्रयोग दूसरे देशों के साथ व्यापार में होने वाले घाटे की भरपाई करने में करता था।

ब्रिटेन के इस व्यापार अधिशेष ने घरेलू खर्चों में सहायता की; जैसे—ब्रिटिश अधिकारियों व व्यापारियों को भेजे जाने वाले व्यक्तिगत धन के लिए तथा बाहरी ऋण के ब्याज का भुगतान करने और भारत में ब्रिटिश अधिकारियों की पेंशन के लिए।

15. ''व्यापार अधिशेष से ब्रिटेन को लाभ प्राप्त हुआ।'' इस कथन की पुष्टि करें।

उत्तर 'व्यापार अधिशेष' एक ऐसी स्थिति है, जिसके अंतर्गत निर्यात की कीमत आयात से अधिक होती है। भारत के साथ ब्रिटेन को व्यापार अधिशेष प्राप्त होता था, जिसके निम्नलिखित कारण थे

- भारत के ब्रिटेन के निर्यात की कीमत भारत से ब्रिटिश आयात की कीमत से कहीं अधिक होती थी।
- भारत में ब्रिटेन के व्यापार से जो अधिशेष प्राप्त होता था, उससे तथा कथित 'होम चार्जेज' का निपटारा होता था। भारतीय बाहरी कर्जों पर ब्याज भी इससे ही दिया जाता था।
- भारत में कार्य कर चुके ब्रिटिश अफसरों को पेंशन भी दी जाती थी। अतः इन्हीं कारणों से भारत के साथ ब्रिटेन को व्यापार अधिशेष प्राप्त था।

16. युद्धोत्तर निर्माण को आकृति प्रदान करने वाले दो प्रभाव कौन-से थे?

उत्तर युद्ध के बाद के पुनर्निर्माण को आकृति प्रदान करने वाले दो महत्त्वपूर्ण प्रभाव निम्नलिखित थे

(i) युद्ध के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका विश्व की प्रमुख राजनीतिक व आर्थिक शक्ति के रूप में उभरा।

(ii) सोवियत संघ महाशक्ति बन गया। इसने नाजी जर्मनी को हरा दिया। इसने स्वयं को कृषि देश से विश्व शक्ति में रूपांतरित कर लिया और यह कम्युनिस्ट गुट के नेता के रूप में पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ा खतरा बन गया।

17. ब्रेटन वुड्स समझौते का क्या अर्थ है? **(NCERT)**

उत्तर दो विश्वयुद्धों के पश्चात् वैश्विक स्तर पर आर्थिक अर्थव्यवस्था को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से कुछ महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए, जिसके द्वारा औद्योगिक विश्व में आर्थिक स्थिरता एवं पूर्ण रोजगार को बनाए रखने की बात की गई। इस फ्रेमवर्क पर जुलाई, 1944 में अमेरिका स्थित न्यू हैंपशायर के ब्रेटन वुड्स नामक स्थान पर संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन में सहमति बनी थी।

सदस्य देशों के विदेश व्यापार में लाभ और घाटे से निपटने के लिए ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में ही अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की स्थापना की गई।

18. खाद्य उपलब्धता पर तकनीक के प्रभाव को दर्शाने के लिए इतिहास से दो उदाहरण दीजिए। **(NCERT)**

उत्तर खाद्य उपलब्धता पर तकनीक के प्रभाव की प्रगति के परिणामस्वरूप सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन प्रभावित हुआ। खाद्य उपलब्धता पर तकनीक के दो प्रभावों का विवरण निम्नलिखित है

(i) **रेलवे नेटवर्क का प्रसार** रेलवे के प्रसार ने भोजन को दूर-दूर तक पहुँचाने में सहायता की। अब भोजन आस-पास के गाँवों या कस्बों की बजाय दूर दराज के शहरों से मँगाए जाने लगे। पानी के बड़े जहाजों के माध्यम से भोज्य सामग्री दूसरे देशों तक भी पहुँचाई जाने लगी थी।

(ii) **रेफ्रिजरेशन तकनीक का विकास** 1870 के दशक तक यूरोप में कच्चे मांस की जगह जिंदा जानवर भेजे जाते थे, जिन्हें बाद में यूरोप के देशों में ही काटा जाता था, किंतु यह व्यापार काफी महँगा साबित हो रहा था। पानी के जहाजों में रेफ्रिजरेशन की तकनीक स्थापित कर दी गई, जिससे जल्दी खराब होने वाली खाद्य सामग्री को भी लंबी यात्राओं पर ले जाया जाने लगा। इससे अब जानवरों की बजाय उनका मांस आयात किए जाने लगा।

19. युद्ध के पश्चात् अर्थशास्त्रियों और राजनीतिज्ञों ने कौन-से दो तथ्य तैयार किए?

उत्तर युद्ध के आर्थिक अनुभवों से अर्थशास्त्रियों और राजनीतिज्ञों ने दो मुख्य तथ्य तैयार किए

(i) **पहला तथ्य** वृहत उत्पादन पर आधारित किसी औद्योगिक समाज को व्यापक उपभोग की आवश्यकता थी। वृहत उपभोग के लिए उच्च और स्थायी आय की आवश्यकता थी तथा स्थायी आय के लिए पूर्ण और स्थिर रोजगार की आवश्यकता थी। इसके लिए सरकार को आवश्यक कदम उठाने चाहिए थे।

(ii) **दूसरा तथ्य** एक देश के दूसरे देश से आर्थिक संपर्कों से संबंधित था। पूर्ण रोजगार का लक्ष्य पाया जा सकता था, यदि वस्तुओं, पूँजी और श्रम के प्रवाहों को नियंत्रण करने की शक्ति केवल सरकार के पास होती।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कॉर्न लॉ कानून को भंग करने के प्रभाव का वर्णन कीजिए। **(CBSE 2014, 10)**

अथवा कॉर्न लॉ को समाप्त करने के बारे में ब्रिटिश सरकार के फैसले पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए। **(NCERT)**

उत्तर कॉर्न लॉ को भंग करने के प्रभाव निम्नलिखित हैं

- भोजन के मूल्य में गिरावट आने से ब्रिटेन में खपत में वृद्धि हो गई। 19वीं शताब्दी के मध्य से ब्रिटेन में तेजी से औद्योगिक वृद्धि हुई और आय भी बढ़ गई तथा भोजन के लिए अधिक माँग में भी बढ़ोतरी हुई।
- कृषि संबंधी उत्पादों का निर्यात करने के लिए नए रेलवे स्टेशनों व बंदरगाहों की आवश्यकता पड़ी।
- कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि होने से अत्यधिक आवासों व प्रबंधनों की आवश्यकता हुई। इन सभी गतिविधियों के लिए पूँजी और श्रम की आवश्यकता थी।
- लंदन जैसे वित्तीय केंद्रों से पूँजी का प्रवाह होने लगा।
- श्रम की माँग के कारण 19वीं शताब्दी में लाखों लोग बेहतर जीवन की तलाश में यूरोप से अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया की ओर प्रवास करने लगे।
- 1890 ई. से वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था का विकास हुआ।
- कभी-कभी रेलों या जहाजों द्वारा हजारों मील से भोजन आता था।
- भारत में ब्रिटिश शासकों ने निर्यात हेतु गेहूँ और कपास में बढ़ोतरी करने के लिए उपजाऊ कृषि भूमि में सिंचाई का विकास कर पंजाब को रूपांतरित कर दिया।
- क्षेत्रीय वस्तुओं का विकास इतनी तेजी से हुआ कि 1820 से 1914 ई. के बीच विश्व व्यापार 25 से 40 गुना बढ़ गया।

2. 19वीं सदी में विश्व में हुए परिवर्तनों में प्रौद्योगिकी की भूमिका का वर्णन कीजिए। **(CBSE 2019)**

उत्तर 19वीं सदी में विश्व में हुए परिवर्तनों में प्रौद्योगिकी की भूमिका निम्न प्रकार है

- **विश्व अर्थव्यवस्था में तकनीकी आविष्कार** रेलवे, भाप के जहाज, टेलीग्राफ आदि महत्त्वपूर्ण आविष्कार थे, जिनके बिना 19वीं सदी की विश्व अर्थव्यवस्था को आकार नहीं दिया जा सकता था।
- **बाजारों की परस्पर संबद्धता** इस समय के परिवहन में नए निवेश व सुधारों से तीव्रगामी रेलगाड़ियाँ, हल्की बोगियाँ और विशालकाय जलपोतों ने कम खर्च में कृषि उत्पाद एवं अन्य उत्पादों को खेतों से दूर-दूर के बाजारों में सुगमता से पहुँचाने में सहायता की।
- **मांस के व्यापार पर प्रभाव** 1870 के दशक तक अमेरिका से यूरोप को मांस का निर्यात नहीं किया जाता था, अपितु जीवित जानवर भेजे जाते, जिन्हें यूरोप ले जाकर काटा जाता था। जीवित जानवर जलपोतों में अधिक जगह घेरते थे। समुद्री यात्रा में कई पशु मर जाते, बीमार हो जाते, भार कम हो जाता या फिर अखाद्य बन जाते। अतः मांस के दाम बहुत ऊँचे और निर्धन यूरोपियों की पहुँच से परे थे। उच्च कीमतों के कारण माँग तथा उत्पादन बहुत कम था, परंतु रेफ्रिजरेशन युक्त जलपोतों ने मांस को एक क्षेत्र से दूसरे तक परिवहन करना सुगम बना दिया।
- **सामाजिक शांति और साम्राज्यवाद** रेफ्रिजरेशन की तकनीक के कारण न केवल समुद्री यात्रा में आने वाला खर्च कम हो गया, बल्कि यूरोप में मांस के दाम भी गिर गए।
- **उपनिवेशवाद** विश्व बाजारों को आपस में जोड़ने में तकनीक ने बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसके फलस्वरूप उपनिवेशवाद को बढ़ावा मिला।

3. ''अनुबंधित श्रमिकों ने अपने जीवन की अभिव्यक्ति के अपने ढंग खोज लिए थे।'' कथन की समीक्षा कीजिए। **(CBSE 2013)**

अथवा उन्नीसवीं सदी के दौरान भारत से अनुबंधित प्रवासी श्रमिकों की स्थिति का वर्णन कीजिए। **(CBSE 2019)**

उत्तर अनुबंधित मजदूर से तात्पर्य किसी नियोक्ता के लिए एक निश्चित समय के लिए विशिष्ट राशि पर अनुबंध के अंतर्गत कार्य करने वाले बँधुआ मजदूर से है, जिन्हें घर या नए देशों में ही भुगतान किया जाता था।

19वीं शताब्दी में लाखों भारतीय व चीनी मजदूर बागानों, खदानों और विश्व की विभिन्न निर्माणकारी परियोजनाओं में कार्य करने के लिए गए। अधिकांश भारतीय अनुबंधित कर्मचारी पूर्वी प्रदेश के वर्तमान राज्यों से, बिहार, मध्य भारत और तमिलनाडु से आए। 19वीं शताब्दी के मध्य में भारत के इन राज्यों में कई सामाजिक परिवर्तन हुए; जैसे—कुटीर उद्योगों का पतन हो गया, जमीन का किराया बढ़ गया और खदानों तथा बागानों के लिए जमीन को साफ कर दिया गया। इन सब कारणों ने गरीबों को कार्य की तलाश में प्रवास करने के लिए बाध्य कर दिया।

भारतीय अनुबंधित प्रवासियों का गंतव्य अर्थात् स्थान भारतीय अनुबंधित प्रवासियों के मुख्य गंतव्य कैरीबियाई द्वीप मुख्यतः त्रिनिदाद, गुयाना तथा सूरीनाम, मॉरिशस और फिजी थे। इसके अतिरिक्त उनके स्थानीय आवास के आस-पास के अन्य स्थान थे। तमिल प्रवासी सीलोन और मलाया गए। कुछ अनुबंधित कर्मचारी आसाम के चाय बागानों में नियुक्त किए गए थे।

अनुबंधित मजदूरों की स्थिति इन मजदूरों की नियुक्ति नियोक्ता से जुड़े और छोटे-छोटे कमीशन पाने वाले एजेंटों के द्वारा की गई थी। एजेंट अनुबंधित मजदूरों से उनकी बेहतर आजीविका दशाओं का, अत्यधिक धन और अन्य सुविधाओं का वादा करके उनकी नियुक्ति करते थे, तथापि जब वे बागानों में पहुँचते थे, तो वहाँ वे विभिन्न परिस्थितियाँ पाते थे, जिनकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। यहाँ की कार्य स्थितियाँ अत्यधिक कठोर थीं तथा मजदूरों के पास कोई कानूनी अधिकार भी नहीं था।

अतः इस प्रकार अनुबंधित श्रमिकों ने अपने जीवन की अभिव्यक्ति के अपने ढंग खोज लिए थे।

4. प्रथम विश्वयुद्ध ने ब्रिटेन में लोगों के आर्थिक जीवन में किस प्रकार परिवर्तन किया? **(CBSE 2008)**

अथवा प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान विश्व के आर्थिक हालातों के विषय में लिखिए। **(CBSE 2013, 12, 10)**

उत्तर प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व ब्रिटेन दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी, किंतु युद्ध के पश्चात् सबसे लंबा संकट भी इसे ही सहना

पड़ा। प्रथम विश्वयुद्ध ने ब्रिटेन के लोगों के जीवन में निम्न परिवर्तन किए

- **भारत और जापान से प्रतिस्पर्द्धा** (विदेशी कर्ज) इस युद्ध के समय भारत और जापान में उद्योग विकसित हो रहे थे। ऐसे में ब्रिटेन को भारतीय बाजार में पहले वाली स्थिति को पाना मुश्किल हो गया था। इसके अतिरिक्त जापान से भी मुकाबला करना था। युद्ध में हुए खर्चों को पूरा करने के लिए ब्रिटेन ने जो अमेरिका से कर्ज लिया था, उसकी भरपाई भी करना आवश्यक था। ऐसे में प्रथम महायुद्ध के पश्चात् ब्रिटेन पर अधिक कर्जे का दबाव था।
- **आर्थिक उछाल का अंत** इस महायुद्ध के कारण विश्व में आर्थिक उछाल का माहौल उत्पन्न हो गया था, क्योंकि माँग और उत्पादन तथा रोजगार में बढ़ोतरी हुई, किंतु युद्ध के पश्चात् जब यह उछाल शांत हुआ तो उत्पादन गिरने लगा तथा बेरोजगारी बढ़ने लगी। वर्ष 1921 में ब्रिटेन में हर पाँच में से एक ब्रिटिश मजदूर बेरोजगार था।
- **व्यय में कटौती** ब्रिटिश सरकार ने अब अधिक युद्ध संबंधी व्यय में भी कटौती शुरू कर दी, जिससे शांतिकालीन करों के माध्यम से उनकी भरपाई की जा सके।
- **ब्रिटिश अर्थव्यवस्था का कमजोर होना** युद्ध के समय तक पूर्वी यूरोप गेहूँ की आपूर्ति का एक बड़ा केंद्र था, किंतु युद्ध के दौरान तो सारी कृषि आधारित अर्थव्यवस्थाएँ भी संकट में रहीं। केवल कनाडा, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में गेहूँ की पैदावार अचानक बढ़ने लगीं। युद्ध की समाप्ति के पश्चात् पूर्वी यूरोप में गेहूँ की पैदावार सुधरने लगी और बाजारों में इसकी अधिकता हो गई। अनाज की कीमतें गिरने लगीं, जिससे किसान कर्ज में डूबने लगे।

5. ''आर्थिक संकट की अवधि के बाद 1920 के दशक के प्रारंभ में संयुक्त राज्य अमेरिका की अर्थव्यवस्था फिर से मजबूत हो गई।'' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर आर्थिक संकट की संक्षिप्त अवधि के बाद 1920 के दशक के प्रारंभ में संयुक्त राज्य अमेरिका की अर्थव्यवस्था फिर से मजबूत होनी शुरू हो गई।

कार निर्माता हेनरी फोर्ड ने डेट्रॉइट में अपने नए कारखाने को 'असेंबली लाइन' में शुरू किया। उन्होंने अनुभव किया कि यह विधि वाहनों को उत्पन्न करने का तीव्र व सस्ता माध्यम प्रदान करेगी। इस असेंबली लाइन ने किसी भी एक कार्य को अनवरत तथा मशीन की तरह करने के लिए कर्मचारियों को बाध्य किया। काम की रफ्तार कन्वेयर बेल्ट की रफ्तार से तय होती थी, परिणामस्वरूप हेनरी फोर्ड की कारें तीन मिनट के अंतराल में असेंबली लाइन से निकलने लगीं।

टी-मॉडल नामक कार वृहत उत्पादन पद्धति से बनी देश की पहली कार थी। फोर्ड ने इस कार्य को करने के लिए कर्मचारियों को उच्च वेतन दिया। तीव्र उत्पादन के माध्यम से फोर्ड ने इस लागत को वापिस प्राप्त कर लिया था। अमेरिका में वर्ष 1919 में कार का उत्पादन 20 लाख था, परंतु वर्ष 1929 में यह 50 लाख हो गया।

वृहत उत्पादन से इंजीनियरिंग आधारित सामानों की लागत व मूल्य कम हो गए; जैसे—रेफ्रिजरेटर (फ्रीज), वाशिंग मशीन, रेडियो, ग्रामोफोन, संगीत आदि। आवास और उपभोक्ता उछाल ने अमेरिका में रोजगार और आय के क्षेत्र बड़ी संख्या में पैदा कर दिए, परिणामस्वरूप यह सबसे बड़ा विदेशी कर्जदाता बन गया।

6. महामंदी के कारणों की व्याख्या कीजिए। **(NCERT)**

उत्तर वर्ष 1929 के आस-पास महामंदी शुरू हो गई और 1930 के दशक के मध्य तक बनी रही। इस अवधि के दौरान संसार के अधिकांश देशों ने उत्पादन, रोजगार, आय और व्यापार में अत्यधिक गिरावट को अनुभव किया।

महामंदी के लिए बहुत-से कारक उत्तरदायी थे, जो निम्न थे

- **पहला कारक** कृषि उत्पादन की अधिकता की समस्या का बने रहना था। इससे कृषि उत्पादों का मूल्य घट गया। किसान ने अपनी संपूर्ण आय को बनाए रखने के लिए उत्पादन का विकास करने का प्रयास किया। इससे स्थिति खराब हो गई तथा कृषि उत्पादों का मूल्य और भी गिर गया।
- **दूसरा कारक** 1920 के दशक के मध्य में बहुत-से देशों ने अमेरिका से कर्ज लेकर अपनी निवेश संबंधी आवश्यकताओं को पूरा किया था। अमेरिकी पूँजीवादियों ने यूरोपीय देशों को ऋण देना बंद कर दिया। इससे यूरोप में कुछ प्रमुख बैंक धराशायी हो गए और मुद्रा का पतन हो गया; जैसे—स्टर्लिंग।

अमेरिका इस मंदी से गंभीर रूप से प्रभावित हुआ, क्योंकि बैंकों ने घरेलू ऋण वापस लेना शुरू कर दिया। इसे 'ऋण वापसी' के नाम से जाना गया। किसान उपज नहीं बेच सके, परिवार तबाह हो गए और व्यवसाय ठप हो गए।

अंततः अमेरिका की बैंकिंग प्रणाली धराशायी हो गई, क्योंकि बैंक निवेशों, एकत्रित ऋणों तथा जमाकर्ताओं के धन को लौटा पाने में असमर्थ थे। अमेरिका ने आयात करों को दोगुना करके मंदी में अपनी अर्थव्यवस्था को सुरक्षित रखने का प्रयास किया, जिससे विश्व व्यापार बुरी तरह से ठप हो गया।

7. अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक विनिमयों में तीन तरह की गतियों या प्रवाहों की व्याख्या कीजिए। तीनों प्रकार की गतियों के भारत और भारतीयों से संबंधित एक-एक उदाहरण दें और उनके बारे में संक्षेप में लिखें। **(NCERT)**

उत्तर अर्थशास्त्रियों ने अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक विनिमय में तीन तरह के प्रवाह या गतियों का उल्लेख किया है, जो निम्नलिखित हैं

(i) **व्यापार का प्रवाह** भारत का अपने पड़ोसी राज्यों के साथ हमेशा ही व्यापारिक संबंध रहा है। यहाँ से गेहूँ, सूती, ऊनी तथा रेशमी वस्त्र इंग्लैंड में भेजे जाते थे। 1812 से 1871 ई. के बीच कच्चे कपास का निर्यात 5% से बढ़कर 35% तक हो गया था। कपड़ों की रँगाई के नील का व्यापार भी बड़े पैमाने पर था जिसका निर्यात होता था।

अफीम की कृषि भी अधिक होने से इसका निर्यात किया जाता था। ब्रिटेन द्वारा भारतीय अफीम को चीन में निर्यात किया जाता था। इस तरह भारतीय व्यापारियों द्वारा गेहूँ, कपास, पटसन, ऊन, रेशम, चाय तथा अन्य पदार्थों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए विदेशी व्यापार पर बल दिया गया।

(ii) **श्रम का प्रवाह** 19वीं शताब्दी में विश्व के कई देशों में भारत के मजदूरों को बागानों, खाद्यान्नों, सड़कों तथा रेलवे परियोजनाओं में काम के लिए ले जाया गया।

(iii) **पूँजी का प्रवाह** शिकारीपुरी श्रॉफ और नाट्टुकोट्टाई चेट्टियार ये उन बैंकरों और व्यापारियों में से थे, जो मध्य एवं दक्षिण-पूर्व एशिया में निर्यातोन्मुखी खेती के लिए कर्ज देते थे।

• केस स्टडी आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

आधुनिक काल से पहले के युग में दुनिया के दूर-दूर स्थित भागों के बीच व्यापारिक और सांस्कृतिक संपर्कों का सबसे जीवंत उदाहरण सिल्क मार्गों के रूप में दिखाई देता है। 'सिल्क मार्ग' नाम से पता चलता है कि इस मार्ग से पश्चिम को भेजे जाने वाले चीनी रेशम (सिल्क) का कितना महत्त्व था। इतिहासकारों ने बहुत सारे सिल्क मार्गों के बारे में बताया है।

जमीन या समुद्र से होकर गुजरने वाले ये रास्ते न केवल एशिया के विशाल क्षेत्रों को एक-दूसरे से जोड़ने का काम करते थे, बल्कि एशिया को यूरोप और उत्तरी अफ्रीका से भी जोड़ते थे। ऐसे मार्ग ईसा पूर्व के समय में ही सामने आ चुके थे और लगभग पंद्रहवीं शताब्दी तक अस्तित्व में थे। इसी रास्ते से चीनी पॉटरी जाती थी और इसी रास्ते से भारत व दक्षिण-पूर्व एशिया के कपड़े व मसाले दुनिया के दूसरे भागों में पहुँचते थे। वापसी में सोने-चाँदी जैसी कीमती धातुएँ यूरोप से एशिया पहुँचती थीं।

व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान, दोनों प्रक्रियाएँ साथ-साथ चलती थीं। शुरुआती काल के ईसाई मिशनरी निश्चय ही इसी मार्ग से एशिया में आते होंगे। कुछ सदी बाद मुस्लिम धर्मोपदेशक भी इसी रास्ते से दुनिया में फैले। इससे भी बहुत पहले पूर्वी भारत में उपजा बौद्ध धर्म सिल्क मार्ग की विविध शाखाओं से ही कई दिशाओं में फैल चुका था।

(i) व्यापारिक मार्गों की प्राचीनकाल में क्या विशेषता थी?

उत्तर प्राचीनकाल में वैश्विक स्तर पर व्यापार सिल्क मार्ग के माध्यम से होता था। ये मार्ग ईसा पूर्व से पंद्रहवीं शताब्दी तक अस्तित्व में रहे थे। इस मार्ग के साथ व्यापारिक गतिविधियों के साथ-साथ सांस्कृतिक तत्त्वों का भी आदान-प्रदान हुआ। इस मार्ग से पश्चिम देशों को रेशम तथा चीनी का आयात किया जाता था।

(ii) इतिहासकारों ने किस प्रकार से सिल्क मार्गों की व्याख्या की थी?

उत्तर इतिहासकारों ने पश्चिम देशों से होने वाले व्यापारिक मार्गों को सिल्क मार्ग कहा, क्योंकि इन भागों से पश्चिम देशों को सिल्क की आपूर्ति की जाती थी। ये मार्ग जमीन तथा समुद्र से होते हुए एशिया को अफ्रीका से जोड़ते थे।

(iii) किस प्रकार सांस्कृतिक आदान-प्रदान को सिल्क मार्गों ने प्रभावित किया?

उत्तर सिल्क मार्गों से व्यापारिक वस्तुओं के साथ सांस्कृतिक विचारों का भी आदान-प्रदान होता था। प्रारंभिक वर्षों में ईसाई मिशनरी इसी मार्ग के माध्यम से एशिया पहुँचे थे। मुस्लिम धर्मोपदेशक ने भी अपने धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए इसी मार्ग का प्रयोग किया था। भारत में विकसित बौद्ध धर्म का प्रसार भी इसी मार्ग के माध्यम से विश्व के अन्य देशों में हुआ था।

2. निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

सोलहवीं सदी में जब यूरोपीय जहाजियों ने एशिया तक का समुद्री रास्ता ढूँढ लिया और वे पश्चिमी सागर को पार करते हुए अमेरिका तक जा पहुँचे तो पूर्व-आधुनिक विश्व बहुत छोटा-सा दिखाई देने लगा। इससे पहले कई सदियों से हिंद महासागर के पानी में फलता-फूलता व्यापार, तरह-तरह के सामान, लोग, ज्ञान और परंपराएँ एक जगह से दूसरी जगह आ-जा रही थीं। भारतीय उपमहाद्वीप इन प्रवाहों के रास्ते में एक अहम बिंदु था। पूरे नेटवर्क में इस इलाके का भारी महत्त्व था। यूरोपियों के दाखिले से यह आवाजाही और बढ़ने लगी और इन प्रवाहों की दिशा यूरोप की तरफ भी मुड़ने लगी।

अपनी 'खोज' से पहले लाखों साल से अमेरिका का दुनिया से कोई संपर्क नहीं था। लेकिन सोलहवीं सदी से उसकी विशाल भूमि और बेहिसाब फसलें व खनिज पदार्थ हर दिशा में जीवन के रूप-रंग बदलने लगे।

आज के पेरू और मैक्सिको में मौजूद खानों से निकलने वाली कीमती धातुओं, खासतौर से चाँदी ने भी यूरोप की संपदा को बढ़ाया और पश्चिम एशिया के साथ होने वाले उसके व्यापार को गति प्रदान की। सत्रहवीं सदी के आते-आते पूरे यूरोप में दक्षिणी अमेरिका की धन-संपदा के बारे में तरह-तरह के किस्से बनने लगे थे। इन्हीं किंवदंतियों की बदौलत वहाँ के लोग एल डोराडो को सोने का शहर मानने लगे और उसकी खोज में बहुत सारे खोजी अभियान शुरू किए गए।

(i) पूर्व-आधुनिक विश्व किन कारणों से छोटा दिखाई देने लगा था?

उत्तर यूरोपीय जहाजियों के द्वारा एशिया के समुद्री मार्गों की खोज तथा पश्चिमी सागर के माध्यम से अमेरिका की खोज ने पूर्व आधुनिक विश्व को छोटा बना दिया था। इन मार्गों का पता चलने के पश्चात् साम्राज्यवादी शक्तियों ने अफ्रीका, एशिया तथा अमेरिकी महाद्वीप से व्यापार में वृद्धि की थी, जिसके पश्चात् विभिन्न महाद्वीपों के मध्य सामाजिक विचारों तथा वस्तुओं को आदान-प्रदान करना आसान हो गया।

(ii) वैश्विक स्तर पर अमेरिकी खोज ने विश्व को किस प्रकार प्रभावित किया?

उत्तर समुद्री खोज के पश्चात् अमेरिका का अन्य देशों के साथ संपर्क सुनिश्चित हुआ। इसके पश्चात् अमेरिका के आर्थिक क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। सोलहवीं सदी से उसकी विशाल भूमि और फसलों व खनिज पदार्थों ने सामाजिक तथा आर्थिक स्वरूप को परिवर्तित कर दिया था, जिसका अत्यधिक लाभ यूरोप के देशों को प्राप्त हुआ था।

(iii) अमेरिका की खदानों से यूरोप पर किस प्रकार का प्रभाव हुआ?

उत्तर अमेरिका की खदानों से प्राप्त धातुओं ने यूरोप की संपदा में वृद्धि की। इसके पश्चात् यूरोप के पश्चिम एशिया से होने वाले व्यापार में वृद्धि हुई। 17वीं सदी में यूरोप में दक्षिण अमेरिका के धन संपदा के बारे में बहुत-सी काल्पनिक मान्यताएँ प्रचलित थीं, जिसके अंतर्गत यूरोपीय लोग अमेरिका के डोराडो को सोने का शहर मानने लगे और उसकी खोज के लिए अनेक खोजी अभियानों की शुरुआत की गई।

3. निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

स्रोत 'अ' अफ्रीका पर रिंडरपेस्ट बीमारी का प्रभाव

अफ्रीका में 1890 के दशक में रिंडरपेस्ट नामक बीमारी बहुत तेजी से फैल गई। मवेशियों में प्लेग की तरह फैलने वाली इस बीमारी से लोगों की आजीविका और स्थानीय अर्थव्यवस्था पर गहरा असर पड़ा। यह इस बात का अच्छा उदाहरण है कि औपनिवेशिक समाजों पर यूरोपीय साम्राज्यवादी ताकतों के प्रभाव से बड़े पैमाने पर क्या असर पड़े। इस उदाहरण से पता चलता है कि हमलों और विजयों के इस युग में दुर्घटनावश फैल गई मवेशियों की बीमारी ने भी हजारों लोगों का जीवन व भाग्य बदल कर रख दिया और दुनिया के साथ उनके संबंधों का नयी शक्ल में ढाल दिया।

(i) अफ्रीका में रिंडरपेस्ट बीमारी का प्रवेश किस प्रकार हुआ था?

उत्तर अफ्रीका में रिंडरपेस्ट बीमारी एरिड्रिया पर हमला कर रहे इतालवी सैनिकों का पेट भरने के लिए एशियाई देशों से लाए जा रहे जानवरों के साथ आई थी। अफ्रीका के पूर्वी हिस्से से महाद्वीप में दाखिल होने वाली यह बीमारी जंगल की आग की तरह पश्चिमी अफ्रीका की तरफ बढ़ने लगी। रिंडरपेस्ट ने अफ्रीका में लगभग 90% मवेशियों की जान ली।

स्रोत 'ब' प्रारंभिक अफ्रीका : सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था

प्राचीनकाल से ही अफ्रीका में जमीन की कभी कोई कमी नहीं रही, जबकि वहाँ की आबादी बहुत कम थी। सदियों तक अफ्रीकियों की जिंदगी व कामकाज जमीन और पालतू पशुओं के सहारे ही चलता रहा है। वहाँ पैसे या वेतन पर काम करने का चलन नहीं था। उन्नीसवीं सदी के आखिर में अफ्रीका में ऐसे उपभोक्ता सामान बहुत कम थे।

जिन्हें वेतन के पैसे से खरीदा जा सकता था। अगर आप अफ्रीका के किसान होते और आपके पास जमीन और पालतू पशु होते-जिनकी वहाँ कोई कमी नहीं थी—तो शायद आपको भी यह बात समझ में नहीं आती कि वेतन के लिए काम करने की क्या जरूरत है।

(ii) प्राचीनकाल में अफ्रीका महाद्वीप के व्यक्तियों की यूरोपीय व्यक्तियों से सामाजिक व्यवस्था किस प्रकार भिन्न थी?

उत्तर प्राचीनकाल में अफ्रीकी व्यक्ति का जीवनयापन भूमि संसाधन तथा पशु की संख्या पर निर्भर था। वहाँ मुद्रा के एवज में कार्य करने की प्रथा नहीं थी। उन्नीसवीं सदी तक अफ्रीका में ऐसे उपभोक्ता सामान बहुत कम थे। जिन्हें वेतन के पैसे से खरीदा जा सकता हो।

स्रोत 'स' यूरोपीय शक्तियों का अफ्रीका महाद्वीप में प्रवेश

उन्नीसवीं सदी के आखिर में यूरोपीय ताकतें अफ्रीका के विशाल भू-क्षेत्र और खनिज भंडारों को देखकर इस महाद्वीप की ओर आकर्षित हुई थीं। यूरोपीय लोग अफ्रीका में बागानी खेती करने और खदानों का दोहन करना चाहते थे ताकि उन्हें वापस यूरोप भेजा जा सके। लेकिन वहाँ एक ऐसी समस्या पेश आई जिसकी उन्हें उम्मीद नहीं थी। वहाँ के लोग तनख्वाह पर काम नहीं करना चाहते थे।

मजदूरों की भर्ती और उन्हें अपने पास रोके रखने के लिए मालिकों ने बहुत सारे हथकंडे आजमा कर देख लिए लेकिन बात नहीं बनी। उन पर भारी भरकम कर लाद दिए गए जिनका भुगतान केवल तभी किया जा सकता था। जब करदाता बागानों या खदानों में काम करता हो।

(ii) अफ्रीका में औपनिवेशिक शक्तियों को किन समस्या का सामना करना पड़ा?

उत्तर अफ्रीका में औपनिवेशिक शक्तियों को खदानों तथा कृषि में कार्य करने वाले मजदूरों की समस्या ने सबसे अधिक प्रभावित किया, क्योंकि अफ्रीका में वेतन पर मजदूर कार्य नहीं करते थे। इसके लिए औपनिवेशिक शक्ति ने अफ्रीकियों पर अत्याधिक कर लगा दिया। जिनका भुगतान केवल तभी किया जा सकता था। जब करदाता बागानी या खदानों में काम करता हो।

चैप्टर टेस्ट

• वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रथम विश्वयुद्ध में कौन निम्नलिखित में से मित्र राष्ट्रों में सम्मिलित नहीं था?
(a) ब्रिटेन (b) फ्रांस (c) ऑस्ट्रिया (d) रूस

2. T-मॉडल नामक कार का उत्पादन निम्न में से कौन-सी कंपनी कर रही थी?
(a) फोर्ड (b) जनरल मोटर्स (c) टोयोटा (d) मर्सिडीज

3. भारत में उगाई जाने वाली अफीम का निर्यात कहाँ किया जाता था?
(a) अमेरिका (b) चीन (c) ब्रिटेन (d) फ्रांस

4. नूडल्स की सर्वप्रथम खोज ………… ने की थी।
(a) चीन (b) भारत (c) जापान (d) रूस

5. भारत में अनुबंधित मजदूर व्यवस्था को कब खत्म कर दिया गया था?
(a) वर्ष 1921 (b) वर्ष 1923 (c) वर्ष 1924 (d) वर्ष 1930

• वर्णनात्मक प्रश्न

लघु उत्तरी प्रश्न

6. रिंडरपेस्ट बीमारी ने किस प्रकार पुर्तगाली औपनिवेशिक शक्ति को सहायता प्रदान की?

7. नई कृषि व्यवस्था से क्या तात्पर्य है?

8. रेशम मार्ग के माध्यम से विश्व के आपसी संपर्क पर एक संक्षिप्त टिप्पणी प्रस्तुत करें।

9. भूमंडलीकृत विश्व की विशेषताएँ क्या हैं?

10. प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान की स्थिति पर टिप्पणी प्रस्तुत करें।

11. विश्वयुद्धों ने किस प्रकार वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

12. वैश्विक अर्थव्यवस्था का उदय किन कारणों से हुआ? उल्लेख करें।

13. अर्थव्यवस्था में तकनीक की भूमिका पर प्रकाश डालें।

14. उपनिवेशवाद से अर्थव्यवस्था पर किस तरह का प्रभाव पड़ता है? बताइए।

15. वैश्विक वित्तीय संस्थानों के निर्माण की प्रक्रिया को विस्तारपूर्वक बताइए।

उत्तर **1.** (c) **2.** (a) **3.** (b) **4.** (a) **5.** (a)